भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

नव प्रभा

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, कार्पोरेट कार्यालय की छमाही पत्रिका
अंक 17 (अप्रैल से सितंबर 2024)

आने वाला समय भारतीय भाषाओं का है...

राजभाषा दृष्टि
RAJBHASHA VISION

संस्थान के कार्यकलाप के हर क्षेत्र में राजभाषा हिंदी को सरल रूप में अपनाना।

To adopt Official Language Hindi in every sphere of activity of the Company in its simple form.

राजभाषा ध्येय
RAJBHASHA MISSION

प्रतिबद्धता, प्रेरणा और प्रोत्साहन द्वारा हिंदी में मूल कार्य करने की संस्कृति को आत्मसात करना और राजभाषा हिंदी को मौखिक, लिखित और इलेक्ट्रॉनिक सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में अपनाना।

To imbibe a culture of doing original work in Hindi through Commitment, Motivation and Incentive and to adopt Rajbhasha Hindi as the spoken, written and electronic medium of communication.

विषय–सूची

01	आने वाला दौर भारतीय भाषाओं का हैं	संगेपल्ली सुरेन्द्र रेड्डी	01
02	सौर ऊर्जा और उसका महत्व	नरेश कुमार	04
03	वर्तमान परिदृश्य में भारतीय भाषाओं की भूमिका	वंदना कुमारी	09
04	रक्षा उत्पादों का सुरक्षा कवच	नितेश तिवारी	12
05	हिंदी और भारतीय भाषाओं का अंतर्संबंध	श्यामलाल दास	16
06	साइबर युद्ध - आधुनिक युग की नई चुनौती	नितिका सरीन	18
07	बुजुर्गों से प्राप्त अतुल्य अनुभव	अजय कुमार दाश	25
08	कहानी सैनिकों की	श्यामल नंदी	26
09	भारतीय भाषाओं की शक्ति - संस्कृति का आधार	चेरुकूरि फणी माधुरी	27
10	नई सीख और विकसित सोच से लक्ष्य की प्राप्ति	एस मणिमेगलै	29
11	मां की बोली, देश का गौरव	चेरुकूरि फणी माधुरी	30
12	कंपनी गतिविधियां		31
13	राजभाषा गतिविधियां		39
14	हिंदी माध्यम से कन्नड़ सीखें		56
15	मूल रूप से हिंदी में कार्य करने की वार्षिक प्रोत्साहन योजनाओं के विजेता		58
16	वर्ग पहेली		61
17	साहित्यकार परिचय		62

कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति

मनोज जैन
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक
अध्यक्ष

विक्रमन एन
निदेशक (मानव संसाधन)
उपाध्यक्ष

हरिकुमार आर
महाप्रबंधक (टी.पी.)
सदस्य

रमा एस
महाप्रबंधक (वित्त)
सदस्य

नीति पंडित
महाप्रबंधक (एस.पी.)
सदस्य

रामकुमार बी
महाप्रबंधक (एच.आर.)
सदस्य

प्रदीप कुमार सेठिया
महाप्रबंधक (आं.ले.प.)
सदस्य

दिब्येंदु बिद्यांत
अ.म.प्र. (एच.आर.)
सदस्य

केशव राजू एच एस
अ.म.प्र. (सतर्कता)
सदस्य

मनोज यादव
अ.म.प्र. (एम.एस.)
सदस्य

श्रीनिवास एस
कंपनी सचिव
सदस्य

ई ए हरिहरन
व.उ.म.प्र. (सी.सी.)
सदस्य

नीरज कुमार चड्ढा
उ.म.प्र. (लाइसेंसिंग)
सदस्य

श्रीनिवास राव
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)
सदस्य सचिव

संदेश

कोई भी भाषा तब समृद्ध होती है जब उसमें उदारता का भी गुण हो। अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को स्वयं में समाहित करने की इसी उदारता के कारण हमारी राजभाषा हिंदी निरंतर समृद्ध होती आई है। हिंदी जनमानस की अभिव्यक्ति, उनके प्रेम और सौहार्द की भाषा है। इसके विभिन्न रंग हैं। जब यह केन्द्र सरकार की कामकाजी भाषा या राजभाषा के रूप में प्रयुक्त होती है तो स्पष्ट, शिष्ट और संस्कृतनिष्ठ रूप में दिखती है। जब साहित्य में ढलती है तो छंद, रस और अलंकारों से युक्त प्रखर और शब्दों की धनी भाषा बन जाती है। जब उत्तर से दक्षिण भारत तक वहां के लोगों द्वारा बोली जाती है तो उस क्षेत्र की स्थानीयता और सभ्यता-संस्कृति के रंग में घुल-मिल कर विशेष अंदाज़ में बोली जाती है और एकता के प्रतीक के रूप में पूरे भारतवर्ष का प्रतिनिधित्व करती है।

जमाना तकनीक का है और भाषा के क्षेत्र में रोज नई-नई प्रौद्योगिकी विकसित की जा रही है। सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए आज हमारे पास एक से बढ़कर एक टूल उपलब्ध हैं। हमें इन सुविधाओं का उपयोग कर तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी को समृद्ध बनाना है। मशीन अनुवाद टूल कंठस्थ 2.0 सहित हम राजभाषा विभाग द्वारा विकसित विभिन्न ई-टूल का प्रयोग कर हिंदी पत्राचार को बढ़ा सकते हैं।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स की गृह-पत्रिका **'नवप्रभा'** भी इसी रूप में विशेष है, क्योंकि भारत भर में स्थित इसकी यूनिटों और कार्यालयों के कर्मचारी अपनी कल्पनाशीलता का परिचय देते हुए स्वरचित लेखों को हम तक पहुंचाते हैं। भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखी ये रचनाएं **'नवप्रभा'** में गुलदस्ते का रूप ले लेती हैं।

"आने वाला समय भारतीय भाषाओं का है" विषय पर केंद्रित **'नवप्रभा'** के सत्रहवें अंक के प्रकाशन पर मैं सभी को शुभकामनाएं देता हूं।

जयहिंद...

मनोज जैन
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

संदेश

भाषा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर की संवाहिका होती है। कोई भी देश अपनी भाषा के बिना अपने राष्ट्रीय व्यक्तित्व को मौलिक रूप से परिभाषित नहीं कर सकता। राष्ट्र की शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति में उस राष्ट्र की भाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। किसी भी सुदृढ़ और मजबूत राष्ट्र की पहचान इस बात से होती है कि उसकी अपनी भाषा कितनी समृद्ध है। संविधान निर्माताओं ने संविधान में, अन्य बातों के साथ-साथ, यह प्रावधान किया था कि संघ हिंदी भाषा का विकास करे और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए संस्कृत और अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उनकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

साथियो, संविधान द्वारा हमें जो दायित्व सौंपा गया है, हमें उसका सच्चे मन से निर्वहन करना है। हम हिंदी के साथ-साथ हमारी सभी भारतीय भाषाओं के विकास के लिए कटिबद्ध हैं। आप जानते हैं कि आज हिंदी में ही नहीं, वरन, अन्य भारतीय भाषाओं में भी उत्तम साहित्य सृजन हो रहा है। हमें इन सभी भाषाओं को साथ लेकर हिंदी का विकास करना है। हिंदी विश्व भाषा बन सके, व्यापार और अर्थ जगत की भाषा बन सके, सूचना क्रांति में वह दुनिया की अन्य महत्वपूर्ण भाषाओं के समकक्ष खड़ी हो सके, इसके लिए हिंदी को अधिक सक्षम बनाना होगा। सितंबर, 2024 में राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित चतुर्थ राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृह मंत्री जी ने भारतीय भाषाओं के महत्व को रेखांकित किया था। मुझे खुशी है कि बीईएल कार्पोरेट कार्यालय की छमाही पत्रिका नवप्रभा का 17वां अंक प्रकाशित किया गया है जो "आने वाला समय भारतीय भाषाओं का है" विषय पर आधारित है।

मैं कार्पोरेट राजभाषा अनुभाग को गृह पत्रिका **नवप्रभा** के प्रकाशन के लिए बधाई और उसकी सक्रियता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

जय हिंद...

विक्रमन एन
निदेशक (मानव संसाधन)

संदेश

हम 'ग' क्षेत्र में यानी हिंदीतर भाषी राज्य में स्थित हैं, इस कारण हिंदी का पठन-पाठन, प्रशिक्षण, अनुवाद कार्य, हिंदी का प्रचार-प्रसार सहित हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। बीईएल में हम राजभाषा कार्यान्वयन को अक्षरत: और भावत: अमल में लाने का हरसंभव प्रयास करते हैं। हम राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने के अलावा राजभाषा का कामकाज व्यावहारिक रूप से बढ़ाने के अनेक पहल भी करते आए हैं। ऐसी एक पहल भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड की इलेक्ट्रॉनिकी (रक्षा एवं रक्षेतर) शब्दावली तैयार करने की है जिसे हमने करीब चार वर्ष पहले शुरु की थी। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, शिक्षा मंत्रालय के समन्वय से यह प्रयास साकार हुआ जिसमें 7200 तकनीकी शब्दावली का हिंदी मानकीकरण किया गया। आपको बताते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता होती है कि पिछले सितंबर में नई दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में इस शब्दावली का लोकार्पण माननीय गृह मंत्री जी के करकमलों से किया गया।

हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण प्रयास है। हमारी हिंदी पत्रिका नवप्रभा वर्ष में दो बार यानी छमाही रूप में निरंतर प्रकाशित की जा रही है जो हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इसका हर अंक अलग रंग और विषय लिए होता है। यह **नवप्रभा** का सत्रहवां अंक है जो "आने वाला समय भारतीय भाषाओं का है", को समर्पित है। मुझे आशा है यह अंक भी आपको पिछले अंकों की तरह अवश्य पसंद आएगा।

नवप्रभा के इस अंक के प्रकाशन पर हिंदी में कामकाज करने के आह्वान के साथ मैं पत्रिका से जुड़े सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

जय हिंद, जय हिंदी...

रामकुमार बी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादकीय...

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
कार्पोरेट कार्यालय

नव प्रभा अंक-17
छमाही पत्रिका
(केवल निजी वितरण के लिए)

मार्गदर्शन
श्री मनोज जैन
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

संरक्षण
श्री विक्रमन एन
निदेशक (मानव संसाधन)

परामर्श
श्री रामकुमार बी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादन
श्री श्रीनिवास राव
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

डॉ. रहिला राज के.एम.
कनिष्ठ अनुवादक

श्री श्यामल नंदी
प्रशिक्षु अधिकारी (राजभाषा)

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखकों के निजी विचार हैं, बीईएल से इसकी सहमति अनिवार्य नहीं है)

हवा में महक मुझे उसकी आने लगी,
उसकी आहट मेरी भाषा में समाने लगी।

पिछले महीने यानी सितंबर की 14 और 15 तारीख को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा नई दिल्ली के भारत मंडपम में दो दिवसीय चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह सम्मेलन विख्यात हो रहा है, यशस्वी हो रहा है और इस बार तो दस हज़ार से भी अधिक लोगों की प्रतिभागिता रही। भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के नामी विद्वानों, भाषाविदों और शिक्षाविदों को सुनने का अवसर मिल रहा है और हम सभी उनके सानिध्य और वाणी से लाभान्वित हो रहे हैं। इस मंच से हमारे गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने राजभाषा हिंदी के साथ सभी भारतीय भाषाओं की महत्ता पर ज़ोर दिया और यह उद्घोषणा की कि आने वाला समय भारतीय भाषाओं का है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी और हमारी क्षेत्रीय भाषाओं के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए उनकी उद्घोषणा बिल्कुल ठीक लगती है। उनकी इसी बात को लेकर हमने अपनी छमाही पत्रिका **नवप्रभा** के इस सत्रहवें अंक का विषय "आने वाला समय भारतीय भाषाओं का है" रखा है। व्यापार, सिनेमा और मीडिया जैसे माध्यमों से क्षेत्रीय भाषाओं के प्रचलित शब्द हिंदी में तेजी से समा रहे हैं। अच्छी बात है कि हिंदी में अन्य भाषाओं के शब्दों को अपने में समाने की उदारता और लोचता है, तभी तो वह समृद्ध बन रही है। अंग्रेजी के बजाय हमारी अपनी भाषाओं के प्रचलित शब्दों का चलन बढ़े तो हिंदी भी बढ़ेगी और हमारी क्षेत्रीय भाषाएं भी। त्रिभाषी सूत्र को थोड़ा हटकर देखें, व्यवहार में इसके प्रयोग को देखें तो पाएंगे इससे संपर्क भाषा में रोचकता पैदा होती है। हिंदी तो पहले से संपर्क भाषा का काम कर ही रही है। जब हिंदीतर भाषी संपर्क भाषा के रूप में हिंदी बोलते हैं तो उनका अंदाज़ और उच्चारण अलग तरह का होता है। हमें इसका स्वागत करना चाहिए, इसका आनंद लेना चाहिए और उनका उत्साहवर्धन करना चाहिए। नई शिक्षा नीति के प्रारंभ से अब प्राथमिक स्तर से लेकर पेशेवर स्तर तक की संपूर्ण पाठ्य सामग्री हमारी अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में मिलने लगी है। हम जानते हैं कि मातृभाषा में सीखने से संकल्पनाएं जल्दी समझ आती हैं। हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं को अब पहले से अधिक महत्व दिया जा रहा है। यह शुभ संकेत है, इससे हमारी सभी भाषाओं की श्रीवृद्धि होगी।

आने वाला दौर भारतीय भाषाओं का हैं

संगेपल्ली सुरेंदर रेड्डी

भारतीय भाषाओं का उदय कई कारकों द्वारा संचालित, भारत के भविष्य को आकार देने वाली एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है। भारत के भाषाई परिदृश्य के निकट भविष्य में क्षेत्रीय भाषाओं के लिए अपार संभावनाएं हैं, जो कई प्रमुख कारकों द्वारा संचालित हैं जो लोगों के संवाद करने, सूचना तक पहुंच बनाने और सामग्री का उपयोग करने के तरीकों को नया आकार दे रहे हैं। जबकि अंग्रेजी और हिंदी ने लंबे समय से भारत के बहुभाषी समाज में महत्वपूर्ण स्थान हासिल किया है, प्रौद्योगिकी, नीतिगत पहल और सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण भारतीय भाषाओं के पुनरुत्थान में गति आ रही है। मनोरंजन और सरकार सहित कई क्षेत्रों में अंग्रेजी का प्रभुत्व धीरे-धीरे कम हो रहा है, क्योंकि क्षेत्रीय भाषाएं सामने आ रही हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि वर्तमान समय में भारत के जितने सरकारी संस्थान, शिक्षा और कार्यालय आदि जगहों पर सभी मातृ भाषा या हिंदी में सीखने लगे है जिसे हम इस प्रकार देख सकते हैं -

1. सरकारी नीतियाँ और शिक्षा

भारत सरकार ने क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने के महत्व को स्वीकार किया है, विशेष रूप से नई शिक्षा नीति (एनईपी NEP) 2020 के माध्यम से, जिसमें प्रारंभिक स्कूली शिक्षा में मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बताया गया है। इस नीति का उद्देश्य बच्चों को उनकी मूल भाषाओं में अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करके सीखने के परिणामों को बढ़ाना है, और साथ ही उच्च शिक्षा और सार्वजनिक जीवन में इन भाषाओं के उपयोग को बढ़ावा देने की उम्मीद की जाती है।

इसके अलावा, सिविल सेवाओं सहित प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में क्षेत्रीय भाषाओं को प्राथमिकता दी जा रही है, जिससे देश के विभिन्न हिस्सों के अभ्यर्थियों के लिए अंग्रेजी प्रवीणता की बाधा के बिना राष्ट्रीय शासन में भाग लेना आसान हो।आधिकारिक और पेशेवर परिस्थितियों में क्षेत्रीय भाषाओं के वर्चस्व के लिए इसका महत्वपूर्ण दीर्घकालिक निहितार्थ है।

2. कारोबार और विपणन

व्यवसाय अपनी पहुंच का विस्तार करने के लिए क्षेत्रीय भाषा बोलने वालों की आवश्यकता को तेजी से महसूस कर रहे हैं। भारत में विपणन अभियान तेजी से बहुभाषी हो रहे हैं, जिसमें निजी स्तर पर उपभोक्ताओं से जुड़ने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग करने वाले ब्रांड शामिल हैं। यह प्रवृत्ति विशेष रूप से एफएमसीजी (FMCG), खुदरा, बैंकिंग और दूरसंचार जैसे क्षेत्रों में देखी जा सकती है, जहां ब्रांड जो ग्राहक की भाषा में संवाद करते हैं उन्हें प्रतिस्पर्धी बढ़त मिलती है।

वॉयस सर्च और एलेक्सा और गूगल असिस्टेंट जैसे एआई(AI)-संचालित सहायकों के भारतीय भाषाओं का समर्थन करने के साथ, क्षेत्रीय भाषा प्रभुत्व की क्षमता और अधिक बढ़ गई है। स्थानीय भाषा का एकीकरण व्यवसायों को एक विविध और अप्रयुक्त उपभोक्ता आधार के साथ जुड़ने की अनुमति देता है, विशेष रूप से जब आवाज इंटरफेस प्रौद्योगिकी अपनाने में अधिक आम हो जाता है।

3. डिजिटल क्रांति और वर्नाक्यूलर इंटरनेट

पूरे भारत में, विशेष रूप से ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में इंटरनेट और स्मार्टफोन की तेजी से बढ़ती पैठ क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। एक रिपोर्ट के अनुसार, अधिकांश नए इंटरनेट उपयोगकर्ता अपनी मूल भाषाओं में सामग्री तक पहुंचना पसंद करते हैं। यूट्यूब, फेसबुक और व्हाट्सऐप जैसे प्लेटफॉर्म क्षेत्रीय भाषाओं का तेजी से समर्थन कर रहे हैंऔर गूगल जैसे सर्च इंजन भारतीय भाषाओं में अपनी क्षमताओं में सुधार कर रहे हैं।

भारत उपयोगकर्ताओं का उदय-भारत में गैर-अंग्रेजी भाषी इंटरनेट उपयोगकर्ताओं का उल्लेख करते हुए- कंपनियों को अपनी सामग्री को स्थानीयकृत करने के लिए मजबूर कर रहा है। उदाहरण के लिए, नेटफ्लिक्स और अमेजन प्राइम जैसे ओटीटी प्लेटफॉर्म अब कई भारतीय भाषाओं में फिल्में, श्रृंखला और शो प्रदान करते हैं। ई-कॉमर्स वेबसाइट भी तमिल, तेलुगु, बंगाली और मराठी जैसी भाषाओं में इंटरफेस का अनुवाद कर रही हैं, जो अंग्रेजी भाषी शहरी क्षेत्रों के बाहर के बड़े उपभोक्ता आधार का दोहन कर रही हैं।

4. सांस्कृतिक पुनर्जागरण और मीडिया

भाषाई पहचान और स्थानीय संस्कृतियों पर बढ़ते गर्व के साथ एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण चल रहा है। क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य, फिल्में, संगीत और मीडिया पूरे भारत में लोकप्रिय हो रहे हैं। तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम उद्योगों की फिल्मों जैसे क्षेत्रीय सिनेमा को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा मिल रही है। बाहुबली और आरआरआर जैसी फिल्मों की सफलता ने बाधाओं को तोड़ने और वैश्विक पहचान हासिल करने की क्षेत्रीय सामग्री की क्षमता को दिखाया है। यह आंशिक रूप से लोकप्रिय संस्कृति में क्षेत्रीय भाषाओं, जैसे फिल्मों और मीडिया के व्यापक उपयोग के कारण है।

क्षेत्रीय समाचार मीडिया भी फल-फूल रहा है।कई स्थानीय समाचार आउटलेटों में पाठकों और दर्शकों की संख्या में वृद्धि देखी जा रही है। यह प्रवृत्ति जारी रहने की संभावना है, क्योंकि अधिकांश लोग अंग्रेजी के बजाय अपनी मूल भाषाओं जानकारी प्राप्त करना पसंद करते हैं।

5. एआई और अनुवाद प्रौद्योगिकियों की भूमिका

एआई और मशीन लर्निंग भाषा की बाधाओं को तोड़ने में महत्वपूर्ण प्रगति कर रहे हैं। प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी NLP) जैसी तकनीकें भारतीय भाषाओं के लिए बेहतर अनुवाद और आवाज की पहचान को सक्षम बना रही हैं, जो बहुत जटिल हैं। भारतीय भाषाओं के लिए एआई-संचालित भाषा उपकरणों में गूगल का निवेश और भारतीय भाषा एआई मॉडल जैसी परियोजनाएं इस बात के उदाहरण हैं कि कैसे क्षेत्रीय भाषाएं डिजिटल क्षेत्र में अधिक प्रमुख होंगी।

स्वचालित अनुवाद, आवाज-से-पाठ की सुविधा और भारतीय भाषाओं में एआई-संचालित ग्राहक सेवा से

कारोबारियों, सरकारी सेवाओं और शैक्षणिक प्लेटफार्मों के लिए क्षेत्रीय भाषा का समर्थन प्रदान करना आसान होने की उम्मीद है, इस प्रकार उनके महत्व को और मजबूत किया जाएगा।

निष्कर्ष

भारतीय भाषाओं का निकट भविष्य गतिशील और शक्तिशाली होने के लिए तैयार है, जिसमें क्षेत्रीय भाषाएं देश के डिजिटल, सांस्कृतिक और सामाजिक ताने-बाने में अपनी जगह फिर से हासिल करने का दावा करती हैं। यह बदलाव केवल भाषाई विविधता में नहीं है, बल्कि भारत की विशाल आबादी में सूचना, सेवाओं और अवसरों तक पहुंच के लोकतंत्रीकरण के बारे में है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी और नीति इन भाषाओं को बढ़ावा और समर्थन देती है, वे भाषाई समावेश और सांस्कृतिक गौरव के लिए एक नए युग को चिह्नित करते हुए भारत के डिजिटल और भौतिक परिदृश्यों पर वर्चस्व स्थापित करने के लिए तैयार हैं।

इस प्रकार, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएं अधिक मुखर होती जा रही हैं, तो भारत के भाषाई परिदृश्य का भविष्य क्षेत्रीय और स्वदेशी भाषाओं के संबंध में इस वृद्धि को संतुलित करने पर निर्भर करेगा। बहस जारी है, लेकिन प्रवृत्ति स्पष्ट है- भविष्य भारतीय भाषाओं का है, हालांकि यह चुनौतियों और अवसरों दोनों के साथ है।

बीईएल - हैदराबाद

मैसूर पैलेस का निर्माण कृष्णराजा वाडियार चतुर्थ द्वारा करवाया गया था। जिसे अम्बा विलास महल के नाम से भी जाना जाता है। मैसूर भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित दूसरा सबसे बड़ा शहर है।

सौर ऊर्जा और उसका महत्व

नरेश कुमार

सौर ऊर्जा, जो सूर्य की किरणों से प्राप्त होती है, एक बेहद महत्वपूर्ण और पर्यावरण-सहायक ऊर्जा स्रोत होती है। यह ऊर्जा स्रोत हमारे जीवन के कई पहलुओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह हमें विद्युत और ऊर्जा की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करता है, जिससे विद्युत संकट और पर्यावरण प्रदूषण को कम किया जा सकता है। सौर ऊर्जा के उपयोग को आधुनिक तकनीक और अनुसंधान के माध्यम से अधिक प्रभावी बना दिया है। सौर ऊर्जा का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। जैसे-जैसे पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों जैसे कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस की उपलब्धता घटती जा रही है और उनकी कीमतें बढ़ती जा रही हैं, सौर ऊर्जा एक स्थायी और किफायती विकल्प बनता जा रहा है। सौर ऊर्जा का उपयोग करने के कई तरीके हैं, जैसे सौर पैनल, सौर ऊर्जा सेल्स, और सौर ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में रूपांतरित करने के उपकरण। इन सभी तकनीकों का उपयोग घरेलू और औद्योगिक उपयोग के लिए किया जा सकता है।

सौर ऊर्जा का उपयोग - सौर ऊर्जा का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है जैसे-

1. **घरेलू उपयोग**

- **बिजली उत्पादन-** घरों की छतों पर सोलर पैनल लगाकर बिजली उत्पन्न की जाती है। इससे बिजली बिलों में कमी आती है और ग्रिड पर निर्भरता कम होती है।
- **सोलर वाटर हीटर-** यह उपकरण सूर्य की ऊष्मा का उपयोग करते हुए पानी को गर्म करता है, जो रसोई और बाथरूम में उपयोग के लिए उपयुक्त है।
- **सोलर लाइट-** सोलर लाइट का उपयोग बगीचों, गलियारों और बाहरी क्षेत्रों को रोशन करने के लिए किया जाता है।

2. **कृषि उपयोग**

- **सोलर पंप-** खेतों में सिंचाई के लिए सोलर पंप का उपयोग किया जाता है। यह पंप सूर्य की ऊर्जा से चलता है और बिजली या डीजल पर निर्भरता कम करता है।

3. **औद्योगिक उपयोग**

- **बिजली उत्पादन-** बड़े सौर ऊर्जा संयंत्र उद्योगों में बिजली की आपूर्ति करते हैं, जिससे उद्योगों की ऊर्जा लागत में कमी आती है।
- **सोलर थर्मल सिस्टम -** यह प्रणाली औद्योगिक प्रक्रियाओं के लिए गर्म पानी प्रदान करती है।

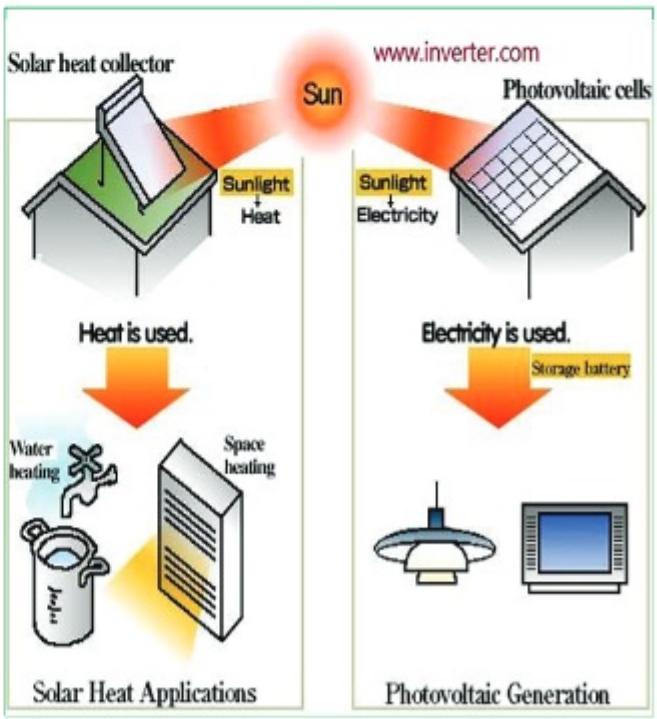

• **सोलर एयर हीटिंग -** औद्योगिक भवनों में हवा को गर्म करने के लिए सौर ऊर्जा का उपयोग किया जाता है, जिससे ऊर्जा बचत होती है।

4. परिवहन में उपयोग

• सोलर पैनल से सुसज्जित कारें जो सूर्य की ऊर्जा से चलती हैं।

• सोलर पैनल से सुसज्जित नावें जो जल परिवहन में उपयोग की जाती हैं।

• इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए सोलर चार्जिंग स्टेशन का उपयोग किया जाता है, जो पर्यावरण के अनुकूल और आर्थिक होते हैं।

5. ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोग

• सोलर मिनी- ग्रिड का उपयोग दूरस्थ गांवों और बस्तियों में बिजली आपूर्ति के लिए किया जाता है।

• सोलर होम सिस्टम का उपयोग ग्रामीण घरों में बिजली, लाइटिंग, और उपकरण चार्जिंग के लिए किया जाता है।

• सौर ऊर्जा से चलने वाली स्ट्रीट लाइटों का उपयोग ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में सड़कों को रोशन करने के लिए किया जाता है।

6. संचार और दूरसंचार

• मोबाइल फोन और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को चार्ज करने के लिए सोलर पावर बैंक का उपयोग किया जाता है।

• दूरसंचार टावरों को बिजली आपूर्ति के लिए सोलर पैनल का उपयोग किया जाता है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहां ग्रिड बिजली की उपलब्धता कम है।

सौर ऊर्जा के घटक - सौर ऊर्जा प्रणाली के विभिन्न घटक इसे प्रभावी ढंग से काम करने में मदद करते हैं। सौर ऊर्जा के मुख्य घटक निम्नलिखित हैं -

- **सौर पैनल -** सौर पैनल, जिन्हें सौर सेल्स भी कहा जाता है, ऊर्जा को सूर्य की किरणों से संशोधित करते हैं। ये पैनल सूर्य की किरणों को धारण करते हैं और उसे विद्युतीय ऊर्जा में परिवर्तित करते हैं।

- **बैटरी -** सौर पैनल से उत्पन्न ऊर्जा को बैटरी में संग्रहित किया जाता है, जिससे ऊर्जा का उपयोग रात्रि या अन्य अवस्थाओं में भी किया जा सकता है।

- **इनवर्टर -** इनवर्टर का काम है बैटरी में संग्रहित विद्युत को वाट की विद्युतीय ऊर्जा में परिवर्तित करना, ताकि इसे घरेलू प्रयोजनों के लिए उपयोग किया जा सके।

- **चार्ज कंट्रोलर -** यह उपकरण सौर पैनल से बैटरी को चार्ज करते समय ऊर्जा के उत्पादन को नियंत्रित करने में मदद करता है, जिससे बैटरी को अधिक चार्ज न होने दिया जाए।

- **वायरिंग और कनेक्शन -** सौर पैनल, बैटरी, इनवर्टर और चार्ज कंट्रोलर को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए वायरिंग और कनेक्शन की आवश्यकता होती है। यह उत्पादन और उपयोग की प्रक्रिया को संचालित करने में महत्वपूर्ण होता है।

- **माउंटिंग सिस्टम -** माउंटिंग सिस्टम का उपयोग सोलर पैनल्स को छत, जमीन या अन्य सतहों पर सुरक्षित रूप से स्थापित करने के लिए किया जाता है। यह सिस्टम पैनल्स को सही कोण पर रखने में मदद करता है ताकि वे अधिकतम सूर्य की रोशनी प्राप्त कर सकें।

- **स्विच और सुरक्षा उपकरण -** स्विच और सुरक्षा उपकरण सौर ऊर्जा प्रणाली को सुरक्षित और नियंत्रित तरीके से संचालित करने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। इनमें फ़्यूज़, सर्किट ब्रेकर और आइसोलेशन स्विच शामिल हैं, जो ओवरलोड और शॉर्ट सर्किट से प्रणाली को सुरक्षित रखते हैं।

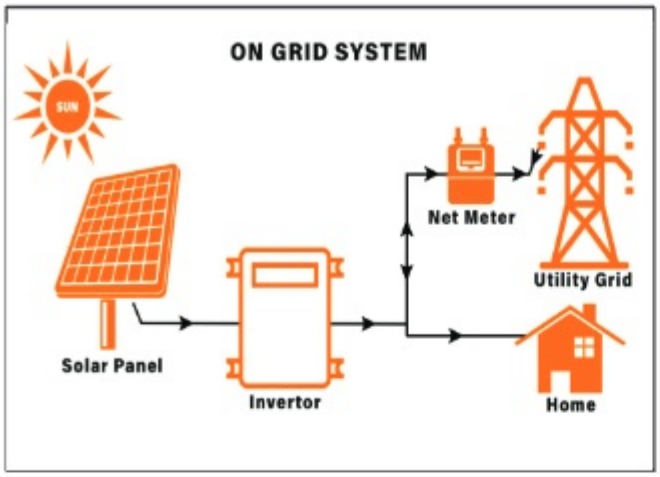

- **मॉनिटरिंग सिस्टम -** मॉनिटरिंग सिस्टम सौर ऊर्जा प्रणाली की प्रदर्शन को ट्रैक और निगरानी करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह सिस्टम उपयोगकर्ता को बिजली उत्पादन, खपत और बैटरी स्तर की जानकारी प्रदान करता है।

डिज़ाइन, कार्यप्रणाली और उपयोग के आधार पर सौर ऊर्जा प्रणालियों के प्रमुख प्रकार हैं -

1. ग्रिड-टाई सोलर सिस्टम - ग्रिड-टाई सोलर सिस्टम का मतलब है कि यह सिस्टम बिजली ग्रिड से जुड़ा होता है। इसके कुछ प्रमुख लाभ और विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- यदि सोलर पैनल पर्याप्त बिजली उत्पन्न नहीं करते हैं, तो आप ग्रिड से बिजली ले सकते हैं।
- अतिरिक्त बिजली ग्रिड में वापस भेजी जा सकती है, जिससे आपको क्रेडिट मिल सकता है (नेट मीटरिंग)।
- बैटरी की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए प्रारंभिक लागत कम होती है।
- बिजली कटौती के समय सिस्टम काम नहीं करता है, क्योंकि यह ग्रिड पर निर्भर होता है।

2. ऑफ-ग्रिड सोलर सिस्टम - ऑफ-ग्रिड सोलर सिस्टम पूरी तरह से ग्रिड से स्वतंत्र होता है और इसमें बैटरी का उपयोग होता है। इसके लाभ और नुकसान निम्नलिखित हैं -

- बिजली कटौती के समय भी बिजली उपलब्ध रहती है।
- दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए उपयुक्त जहाँ ग्रिड कनेक्शन नहीं है।
- बैटरी की उच्च लागत और रखरखाव।
- बैटरियों की सीमित जीवन अवधि।

3. हाइब्रिड सोलर सिस्टम - हाइब्रिड सोलर सिस्टम ग्रिड-टाई और ऑफ-ग्रिड सिस्टम का संयोजन होता है। इसमें बैटरी और ग्रिड दोनों का उपयोग होता है। इसके लाभ और नुकसान निम्नलिखित हैं-

- बिजली कटौती के समय भी बिजली उपलब्ध रहती है।
- अतिरिक्त बिजली को ग्रिड में वापस भेजकर क्रेडिट प्राप्त कर सकते हैं।
- बैटरी और ग्रिड दोनों से बिजली ले सकते हैं।
- उच्च प्रारंभिक लागत।
- जटिल इंस्टॉलेशन और रखरखाव।

4. सोलर वाटर हीटर - सोलर वाटर हीटर का उपयोग पानी को गर्म करने के लिए किया जाता है। इसके प्रमुख प्रकार हैं-

- इंटीग्रल कलेक्टर-स्टोरेज सिस्टम - यह सिस्टम सीधे धूप को अवशोषित करते हुए पानी को गर्म करता है और एक टैंक में संग्रहीत करता है।
- थर्मोसाइफन सिस्टम - यह सिस्टम सूर्य की ऊष्मा का उपयोग करते हुए पानी को सर्कुलेट करता है और गर्म करता है।
- पंप सर्कुलेटेड सिस्टम - इसमें पंप का उपयोग करते हुए पानी को सर्कुलेट और गर्म किया जाता है।

5. सोलर लाइटिंग सिस्टम - सोलर लाइटिंग सिस्टम का उपयोग सड़कों, पार्कों और अन्य बाहरी स्थानों को रोशन करने के लिए किया जाता है। इसमें सोलर पैनल, बैटरी और LED लाइट्स शामिल होते हैं। इसके प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं -

- बिजली की बचत।
- पर्यावरण के अनुकूल।
- रखरखाव की कम आवश्यकता।

6. सोलर पंपिंग सिस्टम - सोलर पंपिंग सिस्टम का उपयोग खेतों में सिंचाई के लिए किया जाता है। इसमें सोलर पैनल, पंप और कंट्रोलर शामिल होते हैं। इसके प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं -

- बिजली और डीजल की बचत।
- दूरस्थ क्षेत्रों के लिए उपयुक्त।
- पर्यावरण के अनुकूल।

सौर ऊर्जा के लाभ - सौर ऊर्जा के उपयोग के कई लाभ हैं जैसे -

- यह एक निःशुल्क स्रोत है, क्योंकि सूर्य हमें हर रोज अपनी किरणों से प्राकृतिक ऊर्जा प्रदान करता है।
- सौर ऊर्जा प्रचुर मात्रा में है। जब तक सूर्य है, तब तक हम सौर ऊर्जा का उपयोग कर सकते हैं।
- यह पर्यावरण को कम नुकसान पहुंचाता है, क्योंकि इसका उपयोग करने पर कोई वायु प्रदूषण नहीं होता है।
- यह अनगिनत ऊर्जा संचय को प्रोत्साहित करता है, जो भविष्य में हमारे लिए उपयोगी हो सकती है।
- सौर ऊर्जा का उपयोग करने से हम अपने विद्युतीय खर्च को कम कर सकते हैं। सौर पैनल लगाकर घरों और औद्योगिक संयंत्रों को सौर ऊर्जा से चालित किया जा सकता है, जिससे विद्युत बिलों में कमी होती है और हमारी ऊर्जा खपत भी कम होती है।
- सौर ऊर्जा प्रणालियों को आमतौर पर न्यूनतम रखरखाव की आवश्यकता होती है।
- सौर उद्योग क्षेत्र में वृद्धि स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा दे सकती है।
- सौर ऊर्जा प्रणालियों का उपयोग छोटे पैमाने पर घरेलू सेटअप से लेकर बड़े पैमाने पर सौर खेतों तक विभिन्न अनुप्रयोगों में किया जा सकता है।
- इन्हें दूरस्थ स्थानों में स्थापित किया जा सकता है, जहाँ अन्यथा बिजली उपलब्ध नहीं हो सकती है।
- यह ऊर्जा का एक हरा स्रोत है जिसका पर्यावरण पर न्यूनतम प्रभाव पड़ता है।

- सौर ऊर्जा प्रणालियों का उपयोग छोटे पैमाने पर घरेलू सेटअप से लेकर बड़े पैमाने पर सौर खेतों तक विभिन्न अनुप्रयोगों में किया जा सकता है। इन्हें दूरस्थ स्थानों में स्थापित किया जा सकता है, जहाँ अन्यथा बिजली उपलब्ध नहीं हो सकती है।
- यह ऊर्जा आपूर्ति में विविधता ला सकती है और ऊर्जा मूल्य में अस्थिरता के जोखिम को कम कर सकती है।
- सोलर ऊर्जा का उपयोग विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है

सौर प्रणाली की चुनौतियां - हालांकि सौर ऊर्जा के कई लाभ हैं, लेकिन इसके विकास में कुछ चुनौतियां भी हैं जैसे-

- सौर ऊर्जा प्रणाली की स्थापना की प्रारंभिक लागत अधिक हो सकती है।
- सौर ऊर्जा उत्पादन मौसम और दिन के समय पर निर्भर करता है, जिससे स्थिर ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करना मुश्किल हो सकता है।
- बड़े सौर ऊर्जा संयंत्रों के लिए बड़े भू-भाग की आवश्यकता होती है।
- सौर ऊर्जा को संग्रहीत करने के लिए बैटरियों की आवश्यकता होती है, जो महंगी होती हैं। बैटरी की लागत और रखरखाव भी उच्च होता है, जिससे पूरी प्रणाली की लागत बढ़ जाती है।

• अधिकांश सौर ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है, जिससे अधिक संख्या में पैनल्स की आवश्यकता होती है।

• सोलर पैनल्स और बैटरियों के निर्माण में उपयोग होने वाले कुछ पदार्थ, जैसे सिलिकॉन, कैडमियम और लेड, पर्यावरण के लिए हानिकारक हो सकते हैं। इन सामग्रियों के उत्पादन और निपटान से पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

• इसके लिए विशेषज्ञता और उचित उपकरणों की आवश्यकता होती है।

निष्कर्ष - सौर ऊर्जा एक स्थायी, पर्यावरण के अनुकूल और आर्थिक रूप से लाभदायक ऊर्जा स्रोत है। इसके उपयोग से न केवल ऊर्जा लागत में कमी आती है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया जा सकता है। सौर तकनीक लगातार उन्नत हो रही है, जिससे दक्षता बढ़ रही है और लागत कम हो रही है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी उन्नति कर रही है और वैश्विक ऊर्जा आवश्यकताएँ बढ़ रही हैं, सौर ऊर्जा महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है। सौर ऊर्जा का उपयोग करने से हम भविष्य में विद्युत और ऊर्जा संकटों का सामना करने के लिए तैयार हो सकते हैं, साथ ही पर्यावरण को भी बचाया जा सकता है। सौर ऊर्जा का भविष्य उज्ज्वल है और यह ऊर्जा संकट से निपटने और हरित और स्वच्छ भविष्य की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। सौर ऊर्जा का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल और संभावनाओं से भरा हुआ है। अधिक से अधिक लोगों को सौर ऊर्जा के उपयोग के लाभों के बारे में जागरूक करने की आवश्यकता है। हमें सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए ताकि हम स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य की दिशा में कदम बढ़ा सकें।

बीईएल गाज़ियाबाद

हम्पी, दक्षिण भारत के एक पुराने शहर विजयनगर में स्थित एक छोटा सा गांव है। हम्पी को रामायण काल में किष्किंधा के नाम से जाना जाता था। हम्पी को 1986 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।

वर्तमान परिदृश्य में भारतीय भाषाओं की भूमिका

वंदना कुमारी

भारत सरकार द्वारा भारतीय भाषाओं के संवर्धन के लिए निरंतर कई कदम उठाएं गए है। संविधान में 22 भाषाओं को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया गया है। इसके अलावा, भारतीय भाषाओं को डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर प्रोत्साहित करने के लिए कई योजनाएं बनाई गई हैं। स्कूलों एवं विश्वविद्यालयों में भारतीय भाषाओं में पढ़ने का महत्व बताया गया है। इस तरह के प्रयासों से भारतीय भाषाओं को प्रौद्यौगिकी और वैश्विक परिवेश में भी समृद्धि प्राप्त होगी। आने वाला समय निश्चित रूप से भारतीय भाषाओं का होगा क्योंकि ये हमारी सांस्कृतिक धरोहर और पहचान है।

भारत का संविधान, भारत का सर्वोच्च विधान है जो संविधान सभा द्वारा 26 नवम्बर 1949 को पारित हुआ तथा 26 जनवरी 1950 से प्रभावी हुआ। भारत का संविधान विश्व के किसी भी गणतान्त्रिक देश का सबसे लम्बा लिखित संविधान है। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची भारत की भाषाओं से संबंधित है, इस अनुसूची में 22 भारतीय भाषाओं को शामिल किया गया है। प्रारम्भ में 14 भाषाओं को संवैधानिक मान्यता दी गई थी बाद में इसमें, सिन्धी भाषा को 21वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 1967, कोंकणी भाषा, मणिपुरी भाषा, और नेपाली भाषा को 71वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 1992 में जोड़ा गया। हाल में 92 वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 2003 में बोड़ो भाषा, डोगरी भाषा, मैथिली भाषा, और संथाली भाषाएं शामिल की गईं।

आठवीं अनुसूची - [अनुच्छेद 344 - 351] – भाषाएं - 22 भाषाओं का उल्लेख।

असमिया, बंगाली, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी , मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओडिया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, बोडो, संथाली, मैथिली, डोगरी

हाल ही में 03 अक्टूबर, 2024 को पीएम नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता वाले केन्द्रीय कैबिनेट ने पांच और भारतीय भाषाओं को शास्त्रीय भाषा (क्लासिकल लैंग्वेज) की सूची में शामिल किया। कैबिनेट के फैसले के तहत अब मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बांग्ला भाषा को शास्त्रीय भाषा (क्लासिकल लैंग्वेज) के तौर पर मान्यता दी गई है। "शास्त्रीय भाषाएं वो समृध्द भाषाएं हैं जो भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत को अपने में संजोए हुए प्रत्येक समुदाय को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्वरूप प्रदान करती हैं।"

तमिल है पहली शास्त्रीय भाषा-

भारत सरकार ने 12 अक्टूबर 2004 को शास्त्रीय भाषा (क्लासिकल लैंग्वेज) के रूप में भाषाओं की एक नई श्रेणी बनाने का निर्णय लिया था, जिसके तहत सबसे पहले

तमिल को शास्त्रीय भाषा घोषित किया गया। उसके बाद संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम और उड़िया को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया। संस्कृत को 2005, तेलुगु को 2008, कन्नड़ को 2008, मलयालम को 2013 और उड़िया को 2013 में इस सूची में शामिल किया गया। पांच नई भाषाओं के शामिल होने के बाद अब इस सूची में कुल 11 शास्त्रीय भाषाएं हो गई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में भारत सरकार ने मातृभाषाओं में शिक्षा पर विशेष बल देते हुए कहा कि,"शिक्षा और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए अर्थात् प्राथमिक शिक्षा को मातृभाषा में देने पर बल दिया गया है। शिक्षा का माध्यम अपनी मातृभाषा में होना अधिक प्रभावी होता है, क्योंकि जब बच्चे अपने भाषा में सीखते है तो उनकी समझ और रचनात्मकता बढ़ती है। मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की उन्नति संभव नहीं है। भाषा राजकीय उत्सवों से नहीं, बल्कि जन सरोकारों और लोक परंपराओं से समृध्द होती है।

13 भारतीय भाषाओं में इंजीनियरिंग का पाठ्यक्रम तैयार करने का काम जारी -

राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है और वह दिन दूर नहीं जब हम विकासशील से विकसित देशों की कतारों में खड़े नजर आएंगे, इन ऊचाइयों को हासिल करने में हिंदी एवं भारत की भाषाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। भारत की 13 भाषाओं में इंजीनियरिंग का पाठ्यक्रम तैयार करने का काम जारी है, यह कदम भारतीय भाषाओं के लिए अहम कड़ी है। गृह मंत्री अमित शाहजी ने भरोसा जताया कि "आने वाला समय भारतीय भाषाओं का है" और आने वाले दिनों में हिंदी अनुसंधान की भी भाषा होगी।

'अब हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाने का समय आ गया है'- अमित शाह

हिंदी और स्थानीय भाषाओं के बीच कभी प्रतिस्पर्धा नहीं हो सकती, वे एक-दूसरे की पूरक हैं। हिंदी दिवस-2024 के अवसर गृह व सहकारिता मंत्री अमित शाहजी ने हिंदी को एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में विकसित करने

की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने कहा कि हिंदी अंतरराष्ट्रीय भाषा बनने की दिशा में आगे बढ़ रही है। उनके अनुसार हिंदी संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनने के साथ ही 10 से अधिक देशों की द्वितीय भाषा बन चुकी है।

हमारी मातृभाषाएं राष्ट्रीय सुरक्षा की अहम कड़ी है, जिस दिन हम अपनी भाषाओं को गंवा देंगे, उस दिन देश की एकता खतरे में पड़ जाएगी। भारतीय भाषा अनुभाग का शुभारंभ करते हुए अमित शाह ने कहा कि "हिंदी शब्द सिंधु" शब्दकोष में सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों को समाहित किया जा रहा है। वर्तमान भारत सरकार द्वारा स्थानीय भाषाओं को बढ़ावा देने की नीति का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और उत्तराखंड में मेडिकल शिक्षा का संपूर्ण पाठ्यक्रम हिंदी में तैयार कर लिया गया है।

वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा

हमारे देश भारत में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। हिंदी, बंगाली, तमिल, मराठी, तेलुगु, उर्दू, गुजराती, पंजाबी, मलयालम, कन्नड़, और कई अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का समृध्द भण्डार यहां मौजूद हैं भारतीय भाषाओं का यह विशाल विस्तार हमारी सांस्कृतिक विविधता और समृद्ध इतिहास को प्रदर्शित करता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय भाषाओं की लोकप्रियता बढ़ रही है। लोग भारतीय साहित्य, कला और संस्कृति को समझने के लिए भारतीय भाषाएं सीख रहे है, यह भारत को वैश्विक मंच पर एक नई पहचान देने में मदद करेगा।

भारतीय भाषाओं का महत्व-

हमारी मातृभाषाएं न केवल हमारी पहचान हैं, बल्कि ये हमारी संस्कृति, परम्पराओं और जीवनशैली का प्रतिबिम्ब भी हैं। भारतीय भाषाओं में साहित्य, संगीत, कला, और ज्ञान का समृद्ध खजाना छिपा हुआ है। संस्कृत, प्राकृत और पाली जैसी प्राचीन भाषाओं में हमारे धार्मिक और सांस्कृतिक ग्रन्थ है, वैसे ही हिंदी मराठी, बांग्ला, तमिल आदि में महान कवि और लेखकों की रचनाएं है जो विश्व भर में प्रसिध्द हैं। भारतीय भाषाओं में ज्ञान का निरंतर प्रवाह और सृजनशीलता है।

वैश्वीकरण और भारतीय भाषाओं की भूमिका-

वैश्वीकरण के इस दौर में जब अंग्रेजी को एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया है, तब भारतीय भाषाओं के सामने चुनौतियां भी आई हैं। अंग्रेजी ने भारतीय समाज में एक नया विमर्श उत्पन्न किया है, जिससे अनेक लोग अपने मातृभाषाओं की ओर से विमुख हो गए है। लेकिन आने वाले समय में साफ़ नजर आता है कि भारतीय भाषाओं को भी एक नया स्थान मिलेगा। डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया और इन्टरनेट की बढ़ती पहुंच के कारण अब भारतीय भाषाओं में भी तकनीकी विकास हो रहा है। अब हिंदी, तमिल, मराठी, आदि में इंटरनेट पर लेख, ब्लाग, वीडियो, फिल्में और टेलीविज़न कार्यक्रम आसानी से उपलब्ध हो रहे है। इस सन्दर्भ में हम यह कह सकते है कि आने वाला समय भारतीय भाषाओं का है।

भू-राजनीति की दृष्टि से भारत में एक नई गतिविधि 'जी-20 का शिखर सम्मेलन' नई दिल्ली में आयोजित हुआ, इस सम्मलेन के साथ वैश्विक मंच पर एक नए भारत का उदय हुआ। भारत की भूमिका इसलिए भी महत्वपूर्ण साबित हो रही है क्योंकि बढ़ते ध्रुवीकरण के बीच वह पश्चिमी देशों की धुरी और रूस-चीन गठजोड़ के बीच संपर्क सेतु के बीच उभर रहा है। दुनिया भारत के मानव केन्द्रित विकास माडल पर ध्यान दे रही है, चाहे वह आर्थिक विकास हो, तकनीकी प्रगति हो, संस्थागत वितरण हो या फिर सामाजिक बुनियादी ढ़ांचा हो, इन सभी को भारतीय भाषाओं तक ले जाया जा रहा है। इस सन्दर्भ में भी हम यह कह सकते है कि आने वाला समय भारतीय भाषाओं का है।

क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली

राजभाषा नियम , 1976 के नियम 5 के अनुसार केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना हैं।

रक्षा उत्पादों का सुरक्षा कवच

नितेश तिवारी

सन् 1967 में वियतनाम युद्ध के दौरान अमेरिका का यूएसएस फोरेस्ट्रल विमानवाहक पोत तैनात था। एक अभियान के दौरान उतरते हुए विमान से एक मिसाइल फायर हो गई जिससे पोत पर तैनात ईंधन से भरे विमानों में आग लग गई और कई सैनिक शहीद हो गए। गहन जांच में पाया गया कि पोत के रेडार की माइक्रोवेव तरंगों से उतरते हुए विमान की पूरी संरचना आवेशित हो गई थी। जिसके कारण मिसाइल फायर प्रणाली को एक अनचाहा संकेत प्राप्त हुआ और मिसाइल फायर हो गई। आगे जांच में पता लगा कि विमान में मिसाइल प्रणाली को मिसाइल फायर के लिए माइक्रोवोल्ट में सिग्नल की आवश्यकता थी। रेडियो विकिरण से आवेशित विमान की बॉडी ने इतना कम विद्युत वाहक बल प्रदान कर दिया जिससे उत्पन्न हुए माइक्रोवोल्ट सिग्नल ने मिसाइल प्रणाली को सक्रिय कर दिया। जिसके कारण इतनी बड़ी दुर्घटना हुई। (चित्र संख्या 1 देखें)

इस दुर्घटना के बाद भी कई दुर्घटनाएं हुई जिसके बाद उपकरणों को बाहरी हस्तक्षेपों से बचाने के लिए काफी अध्ययन हुए। इनमें से एक मुख्य शोध पत्र 1995 में आया। जुलाई, 1995 में नासा शोध पत्र प्रकाशन संख्या 1374 के अंतर्गत सर आर. डी. लीच और सर एलेक्जेंडर द्वारा 'इलेक्ट्रॉनिक्स प्रणाली की विफलता एवं विद्युत चुम्बकीय व्यवधान के लिए जिम्मेदार विसंगतियां' शीर्षक से रिपोर्ट प्रकाशित हुई। यह रिपोर्ट विद्युत चुम्बकीय दुष्प्रभावों से होने वाली हानियों का विस्तृत विवरण प्रदान करती है। यह शोध पत्र इतिहास में दुर्घटनाओं का विवरण तो देती ही है साथ में उसकी रोकथाम के उपायों के प्रावधान भी प्रस्तुत करती है।

विद्युत चुम्बकत्व के मौलिक नियम - हमनें भौतिकी में पढ़ा है कि जब किसी विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र (इलेक्ट्रो-मेग्नेटिक फील्ड) में किसी चालक (कंडक्टर) को रखा जाता है तो उसमें विद्युत वाहक बल (इलेक्ट्रोमोटिव फोर्स) पैदा होता है (चित्र संख्या 2)। इसके विपरीत यदि किसी चालक से विद्युत धारा (इलेक्ट्रिक करेंट) का प्रवाह होता है तो उसमें विद्युत धारा की उपस्थिति में विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र बनता है। अब इस अवस्था के प्रभावों के हम समझते हैं। मान लीजिए यदि दो चालक तारों को अगल-बगल रख दिया जाए और दोनों में यदि अलग-अलग मान की विद्युत धारा प्रवाहित हो रही है तो यह तय है कि दोनों ही अपना विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र बनाएंगे। दोनों ही चालक एक दूसरे के विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र में आ रहे हैं यानी दोनों के ही विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र एक दूसरे चालक में विद्युत वाहक बल भी उत्पन्न करने की लिए प्रेरित करेंगे। यही विद्युत वाहक बल पहले से बह रही विद्युत धारा में त्रुटियां उत्पन्न करेगा जिससे व्यवधान उत्पन्न होगा। यही स्थिति कार्य करते हुए आसपास रखे विद्युत उपकरणों पर भी लागू होती है। यह पूरी प्रक्रिया विद्युतचुम्बकीय प्रेरण के सिद्धांत पर आधारित है जिसकी खोज माइकल फेराडे ने 1831 में की थी।

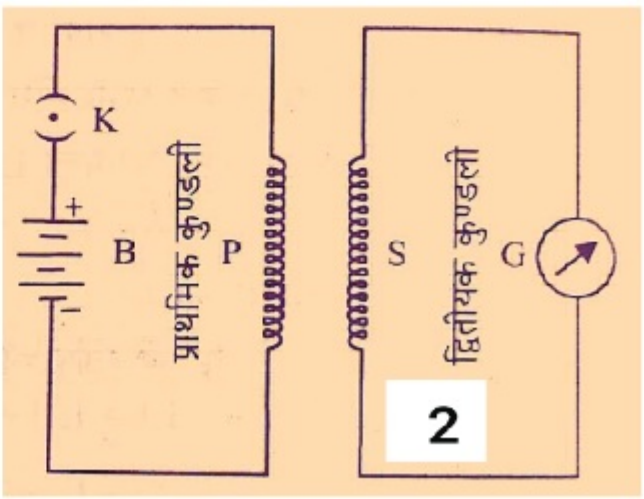

फैराडे केज प्रयोग- सन् 1836 में माइकल फेराडे ने एक प्रयोग किया जिसमें धातु से बनी एक बेलनाकर जाली को शक्तिशाली विद्युतचुम्बकीय क्षेत्र में रखा गया। अब जाली के अंदर उस विद्युतचुम्बकीय क्षेत्र का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ रहा था क्यूंकि विद्युत चुम्बकत्व के सिद्धांत के अनुसार सारी विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा धातु की जाली पर विद्युत ऊर्जा में बदल जा रही थी। यही प्रयोग आगे चल कर विद्युतचुम्बकीय व्यवधानों का सफल समाधान साबित हुआ।

तकनीकी आधार पर तीन विद्युत चुम्बकीय स्थितियां देखने को मिलती हैं-

विद्युत चुम्बकीय व्यवधान (इलेक्ट्रोमेग्नेटिक इंटरफेयरेन्स या ईएमआई) - जब एक इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण के विद्युत चुम्बकीय उत्सर्जन से किसी अन्य इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण के सामान्य संचालन में हस्तक्षेप उत्पन्न होता है तो इस संभावित व्यवधान से उपकरण के सुचारु संचालन (ऑपरेशन) में खराबी होती है। इसे ईएमआई प्रभाव कहते हैं। यह विभिन्न स्रोतों से उत्पन्न हो सकती है जैसे रेडियो फ्रिक्वेंसी (आर.एफ), विद्युत शोर (नॉईस) आदि। उदाहरण के लिए आपने देखा होगा जब आप रेडियो सुन रहे होते हैं तो उसी समय आकाश में विद्युत कड़कने या कोई इलेक्ट्रिक मोटर के चल जाने से भी रेडियो की आवाज में व्यवधान उत्पन्न होता है। इसके अलावा अन्य विद्युत उपकरणों से भी समस्या आ सकती है (चित्र संख्या-6 देखें)

विद्युत चुम्बकीय संवेदनशीलता (इलेक्ट्रोमेग्नेटिक ससेप्टिबिलिटी या ईएमएस) - यह उस अवस्था को बताता है जब कोई इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण या प्रणाली बाहरी विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों, हस्तक्षेप या बाधा के प्रति कितना संवेदनशील हो सकता है। अच्छी विद्युत चुम्बकीय संवेदनशीलता लिए डिजाइनिंग में परिरक्षण (शिल्डिंग), फिल्टरन और भू-संपर्कन जैसे सुरक्षात्मक उपायों को शामिल करते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उपकरण विभिन्न विद्युत चुम्बकीय वातावरण में अच्छी तरह कार्य कर सके।

विद्युतचुम्बकीय अनुकूलता (इलेक्ट्रोमेग्नेटिक कोंपटिबिलिटी ईएमसी) - यह अवस्था विभिन्न उपकरणों और प्रणालियों की एक दूसरे में विद्युतचुम्बकीय हस्तक्षेप पैदा किए बिना निकटता में रहने और संचालन करने की क्षमता को प्रदर्शित करती है। ईएमसी यह सुनिश्चित करता है कि जब उपकरण विद्युत चुम्बकीय इंटरेक्शन के कारण व्यवधान' या खराबी जैसे अवांछित प्रभावों कि संभावना को कम करते हुए वांछित कार्य कर सके। ईएमसी उत्पादों को इस प्रकार बनाया जाता है कि वे न तो किसी प्रकार का विद्युतचुंबकीय व्यवधान उत्पन्न करे न ही किसी प्रकार के विद्युतचुंबकीय प्रभाव से प्रभावित हो।

चित्र संख्या 3 में हम तीनों ही परिस्थितियों के आपसी संबंध पर विचार कर सकते हैं। जब किसी उपकरण का विद्युतचुंबकीय व्यवधान (ईएमआई) तथा विद्युतचुंबकीय संवेदनशीलता (ईएमएस) समान होंगे तो उस उपकरण को विद्युतचुंबकीय की अनुकूलतम परिस्थिति में विद्यमान माना जाएगा। यह एक आदर्श स्थिति है।

रक्षा उत्पादों में इस आदर्श स्थिति को पूर्णतः तो प्राप्त नहीं किया जा सकता परंतु कुछ उत्तम तकनीकी उपायों के द्वारा व्यवधानों को बहुत कम किया जा सकता है।

विद्युतचुंबकीय प्रभावों से बचने के उपाय -

1) शिल्डिंग- घर में टीवी केबल को काटने पर उसके मध्य से एक चालक तथा उसके ऊपर सफ़ेद टेफ़्लोन परत के ऊपर एक जालीनुमा पतले तारों की संरचना देखने को

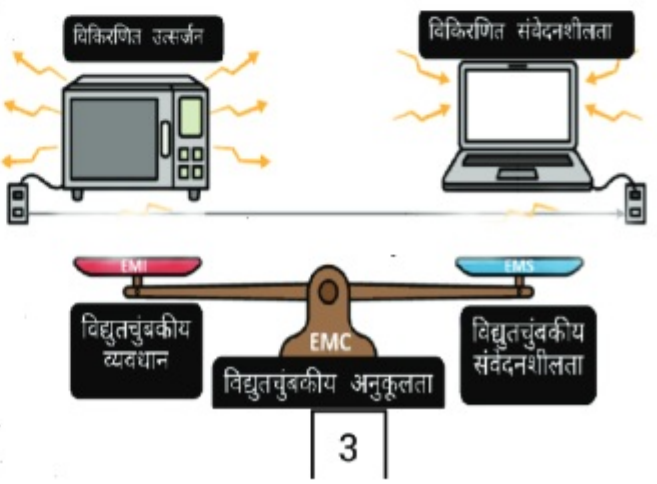

3

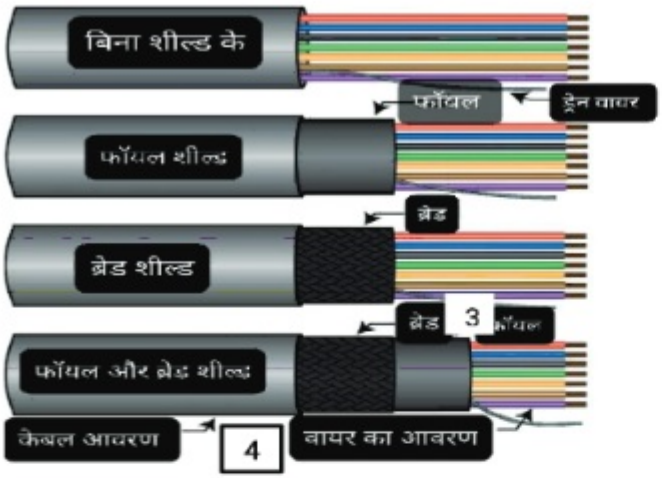

मिलती है। इसके अलावा रक्षा क्षेत्र में सर्कुलर कनेक्ट्रों से जुड़े केबलों पर अलग से तांबे की जाली (मेश) चढ़ाते हुए देखा होगा जिसे कनेक्टर की बॉडी द्वारा ग्राउंड कर दिया जाता है। ये शिल्डिंग का एक उदाहरण है। (चित्र संख्या 4)

प्राय: शिल्डिंग तीन प्रकार की होती है - (चित्र संख्या 4)

क) ब्रेडेड शिल्डिंग- इसमें धातु के तारों की एक इलेक्ट्रोप्लेटेड मेश या ब्रेडेड जाली होती है जो केबल को बाहरी इंटेर्फेयरेन्स से बचाती है। यह लोचदार होती है और कई तरह के इंटेर्फेयरेंस स्रोतों से सुरक्षा प्रदान करती है।

ख) फोइल शिल्डिंग- इसमें केबल के चारों और धातु फॉइल लगाई जाती है जो बाहरी इंटेर्फेयरेंस से सुरक्षा प्रदान करती है। यह अधिकतर संचार में उपयोग में लाई जाने केबलों जैसे केट 6 तथा केट 11 केबलों आदि में उपयोग में लाई जाती है जहां लोचता की अधिक आवश्यकता होती है।

ग) कोंबिनेशन शिल्डिंग- इसमें ब्रेडेड शिल्डिंग और फॉइल शिल्डिंग दोनों का ही उपयोग होता है।

2) फिल्टरन - यह एक इलेक्ट्रॉनिक युक्ति है जिसमे विशेष सर्किट का चालक पथ में उपयोग में लाया जाता है। इसका विशेष डिज़ाइन अवांछनीय आवृत्ति को पहले ही रोक देता है तथा उचित व वांछनीय सिग्नल को संचालन में जाने देता है।

3) उचित भूसंपर्कन - ऊपर हमने देखा कि कैसे विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, चालक में विद्युत वाहक बल पैदा कर देता है। अतः सुरक्षा के लिए लगाई शिल्डिंग युक्तियों को सर्किट में ही ग्राउंड कर देना चाहिए। कई कनेक्टर में ग्राउडिंग पिन मुख्यतः इसलिए ही दी जाती है।

4) गैसकेट और मेटल शील्डिंग- इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों की शिल्डिंग के लिए उपकरणों को धातु से बनी कैबिनेट को खुली जगहों पर रबड़ मिश्रित धात्विक गैस्केट का उपयोग किया जाता है। कुछ गेस्केट उपकरण को ईएमआई के साथ साथ वातावरण की नमी, धूल, पानी आदि से भी बचाते हैं। प्रिंटेड सर्किट बोर्ड पर कई आई. सी. और कॉम्पोनेंट पर मेटल बॉक्स शील्डिंग उपयोग में लाई जाती है।

सिम प्लेट शील्डिंग- हाई पावर रेडियो तरंगों को वेव गाइड द्वारा ट्रांसमीट और रिसिव किया जाता है। वेव गाइड कॉपर या अल्युमीनियुम की खाली ट्यूब होती हैं। इन ट्यूब के जोड़ों पर आर. एफ. लीक का खतरा बना

रहता है। जिससे अन्य उपकरण क्षतिग्रस्त हो सकते हैं। इसे रोकने के लिए जोड़ों पर रबड़ की गैस्केट से युक्त धातु की अतिरिक्त प्लेटें जोड़ी जाती हैं जो किसी भी प्रकार की लीक हुई आर. एफ. तरंग को वेव गाइड की बॉडी पर ही ग्राउंड कर देती है।

रक्षा उत्पादों के लिए उपयोगिता एवं सावधानियां - विश्व में बदलते सामरिक परिवेश और युद्ध संबंधी नीतियों पर आधुनिक प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव ने रक्षा संबंधी

उत्पादों की डिज़ाइनिंग में परिवर्तन कर दिया है। आने वाले समय में पारंपरिक युद्ध सामग्री सिर्फ संग्रहालयों में देखने को मिलेगी। इलेक्ट्रॉनिक्स प्रौद्योगिकी का अत्यधिक उपयोग आज विरोधी ताकतों को पूर्णतः पंगु बनाने के लिए हो रहा है। रेडियो पल्स बॉम्ब जैसे युद्धक सामग्री का उपयोग हो रहा है जिनसे अत्यधिक शक्तिशाली रेडियो पल्स निकलती है। इनसे इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण खराब हो जाते हैं। उपकरणों को इस तरह के आक्रमणों से बचाने के लिए शिल्डिंग सबसे उत्तम उपाय है।

रक्षा सामग्री के अग्रणी निर्माता होने के नाते अपने ग्राहकों हेतु गुणवत्ता के उच्चतम मापदंड पर आधारित रक्षा उत्पाद तैयार करना हमारा प्रथम दायित्व है। अतः हमारे रक्षा उत्पाद भी इस तरह की हानियों से प्रतिरक्षित होने चाहिए। हमें अपने रक्षा उत्पादों में उत्पादन के दौरान शिल्डिंग से संबंधित सावधानियां बरतनी चाहिए। छोटी सी चूक भी उपकरणों के लिए हानिकारक हो सकती है।

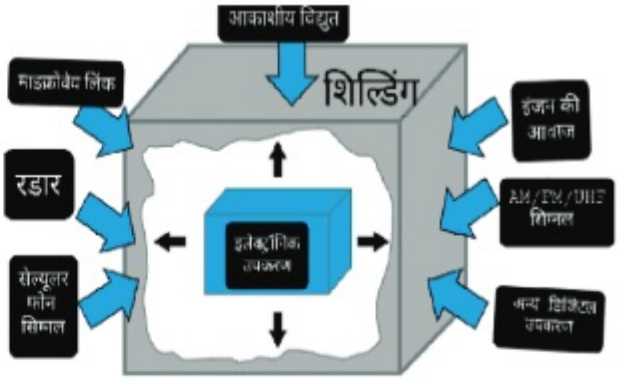

किसी भी तरह की दुविधा पर उत्पादन को लेकर कोताही न बरतें तथा उस पर प्रश्न उठाएं, उसकी जांच करें। जिस प्रकार हमारे रक्षा उत्पाद देश की रक्षा प्रणाली की आत्मा हैं, उसी प्रकार से उत्तम शीलिंडंग हमारे उत्पादों के लिए रक्षा कवच है।

बीईएल गाज़ियाबाद

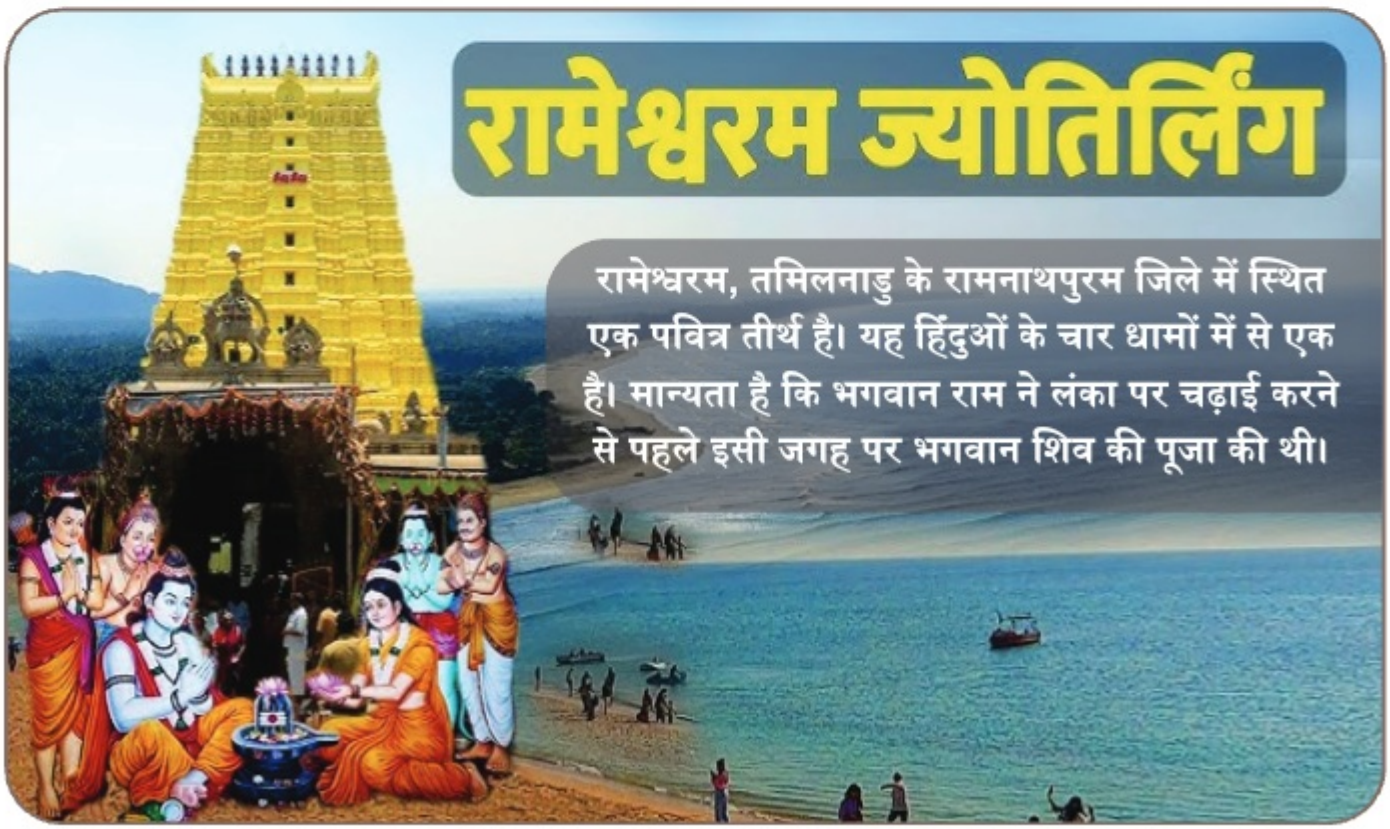

हिंदी और भारतीय भाषाओं का अंतर्संबंध

श्यामलाल दास

भारतीय भाषाएँ मूल रूप में संस्कृत एवं देवनागरी लिपि के कारण ही विकसित हुई है। भारत अपनी संस्कृति सभ्यता के कारण निरंतर उन्नत है। पूरे विश्व में भारत एकमात्र ऐसा देश है जहां अलग-अलग धर्म, जाति, पंथ, संस्कृति एवं परम्पराओं के लोग मिलजुल कर शांति से रहते हैं। इसलिए भारत को अनेकता में एकता का देश भी कहा जाता है, भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में से एक है। आज हर देश आधुनिकता के दौड़ में अपनी संस्कृतियों को छोड़ रहा है लेकिन भारत में ऐसा नहीं है। यहाँ आज भी लोगो को अपनी भाषा एवं संस्कृति से अत्यंत लगाव है।

भाषा हमें संस्कार प्रदान करती है और दुनिया का कोई भी देश बिना भाषा संस्कार के समृद्ध नहीं हो सकता।

उन्हीं देशों में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टि से सर्वांगीण विकास होता हैं जहां की अपनी भाषा होती है। हिंदी को सर्व सहमति से 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया । अनुच्छेद 343(1) के तहत हिंदी संघ की राजभाषा बनी और लिपि देवनागरी बनी।

भारत के विविध प्रांतों के स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी में लिखे गए क्रांतिकारी गीतों से भारत के जन-जन के बीच अनेकता में एकता की भावना को जागृत किया । देश के विविध भाषी जैसे – पंजाबी, मराठी, तमिल तेलगु, कन्नड, मलयालम, बंगला, उड़िया, आसामी इत्यादि भाषा आंदोलनकारियों को एकजुट करने में हिंदी के साथ भारतीय भाषाओं ने देश को आजादी दिलाने में एकजुटता दिखाई । उदाहरण स्वरूप महाराष्ट्र के नामदेव, बंगाल के महाप्रभु चैतन्य, हरियाणा के गुरु गोविंद सिंह, राजस्थान के दादू दयाल आदि थे । सांस्कृतिक एकसूत्रता के माध्यम से भाषाई अन्तःचेतना का विस्तार आजादी का एक महत्वपूर्ण आयाम है।

भारत में सांस्कृतिक सेतु का निर्माण करने के तकनीकी ज्ञान- विज्ञान, संस्कृति, सैन्य, युद्ध पद्धति, उच्च शिक्षा एवं मानविकी में अनेक आयामों का आदान-प्रदान हो रहा है । वैज्ञानिक मिसाइल मेन नाम से विख्यात पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम की मातृ भाषा तमिल है। प्रारंभिक दौर में जब वे भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय ने सुरक्षा सलाहकार थे, उन्होंने देश की तीनों सेनाओं (थल, वायु एवं जल सेना) की बैठक में कार्यवाही तत्कालीन रक्षा मंत्री के निर्देश में मिनट बुक हिंदी में लिखी। उसी में सुरक्षा सलाहकार के रूप में डॉ. अब्दुल कलाम ने अँग्रेजी के स्थान पर हिंदी में हस्ताक्षर करके राष्ट्रभाषा के प्रति लगाव से सभी को जागृत कर दिया। इस प्रकार सभी भारतीय भाषाओं का साहित्य स्वतन्त्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भाषा सरल, सहज होने पर वह और भी मधुर होती है जिसके कारण आपस में सहमति बनती जाती है। इस प्रकार हमारे नरम और गरम दल के नेता किसी सीमा तक एकमत हुए। आज हम भाषा को लेकर विवाद करते हैं कि हिंदी दक्षिणवासियों पर लादी जा रही है किन्तु सच यह है कि हम अंग्रेजी का मोह छोड़ नहीं पा रहे हैं। यह आश्चर्यचकित करने वाला तथ्य है कि विदेशी संस्कृत और हिंदी पढ़ने के आकांक्षी हैं। हम भावों को अभिव्यक्ति के बजाय भाषा की सीमा में विवाद खड़े कर रहे हैं जो अनुचित है। आधुनिक तकनीक ने भाषा शिक्षा पद्धति को और भी सरल बना दिया है। मोबाइल, कंप्यूटर जीवन की अनिवार्यता बन गए हैं। व्यावसायिक दृष्टि से देखा जाए तो वर्तमान समय में भाषा विशेषज्ञों की मांग बढ़ी है इसके कारण कई लोग रोजगार पा रहे हैं।

इस प्रकार कहा जाए तो हिंदी समुद्र का एक विस्तृत रूप है एवं अन्य सभी भारतीय भाषाएँ एक नदी की भांति हैं जो भाषा रूपी समुद्र में कहीं न कहीं जाकर समा जाती है। हिंदी सभी क्षेत्रीय व स्थानीय भाषाओं को साथ लेकर चलती है और उसे दिशा प्रदान करती है। आज देखा जाए तो हमारा राजभाषा विभाग भी हिंदी के साथ- साथ अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग को सरकारी कार्यालयों में बढ़ावा दे रहा है। सरकारी कामकाज में जैसे– नाम पट्ट, साइन बोर्ड, बैनर आदि को त्रिभाषी अर्थात क्षेत्रीय भाषा में करना राजभाषा विभाग की अत्यंत ही उपयोगी पहल है जिससे हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषा का भी विस्तार देखने को मिलता है। अन्य दृष्टिकोण से भी देखा जाए तो हमारे देश के प्रधानमंत्री जब भी अन्य राज्य या देश में जाते हैं तो वहाँ जाकर बैठक में वार्तालाप या जन समूह से केवल हिंदी में ही बात करते हैं एवं इसकी शुरुआत वहाँ के क्षेत्रीय भाषाओं के साथ करते हैं इससे पता चलता है कि हिंदी सहित अन्य भाषाओं का अंतःसंबंध कितना कितना अटूट है।

बीईएल, चेन्नई

साइबर युद्ध - आधुनिक युग की एक नई चुनौती

नितिका सरीन

अभी हाल ही में मई महीने में यह खबर सुर्खियों में थी कि विदेशी हैकरों द्वारा भारतीय सेना व सुरक्षा बल की वेबसाइट को हैक कर अफसरों का गोपनीय डेटा सार्वजनिक कर दिया गया। इसमें उनकी उँगलियों के निशान, चेहरे की पहचान, नाम और पते शामिल थे जिसका कोई भी आतंकवादी संगठन बड़ी आसानी से दुरुपयोग कर सकता है। ऐसे ही मई 2021 से फरवरी 2022 के बीच चीन द्वारा प्रायोजित हैकरों के एक समूह APT41 ने अमेरिका की छह राज्य सरकारों के साइबर खज़ानों पर हमला किया था। क्या कभी आपने इस बात पर विचार किया है की ऐसा कैसे संभव हो पाया?

वर्तमान युग में प्रौद्योगिकी के विकास ने हमारे जीवन के लगभग हर पहलू को प्रभावित किया है। इसके साथ ही, सूचना प्रौद्योगिकी और इंटरनेट का विस्तार भी हुआ है जिसने न केवल संचार और सूचना आदान-प्रदान को सरल और सुविधाजनक बनाया है, बल्कि हमारे सुरक्षा उपायों को चुनौती भी दी है और नए खतरों और चुनौतियों को भी जन्म दिया है। इनमें से एक महत्वपूर्ण और उभरती हुई चुनौती है साइबर युद्ध।

साइबर युद्ध क्या है?

साइबर युद्ध, जिसे साइबर वारफेयर भी कहा जाता है, 21वीं सदी का एक महत्वपूर्ण और आधुनिक युद्धनीति का रूप है। साइबर को अक्सर युद्ध के पांचवें आयाम के रूप में प्रचारित किया जाता है - भूमि, समुद्र, वायु, अंतरिक्ष के अलावा। यह एक ऐसा परिदृश्य है जिसमें राज्य, गैर-राज्य अभिनेता और संगठित अपराधी इंटरनेट, तकनीकी उपकरणों और अन्य डिजिटल नेटवर्क व अवसंरचना के माध्यम से दूसरे राष्ट्रों या संगठनों की सूचना प्रणाली, डेटा या संरचनात्मक सुविधाओं पर आक्रमण करते हैं। पारंपरिक युद्ध की तुलना में, जहां शारीरिक हथियारों और सैनिकों का प्रयोग होता है, साइबर युद्ध में तकनीकी उपकरण और सॉफ्टवेयर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और कम्प्यूटर सिस्टम्स, नेटवर्क्स और महत्वपूर्ण डेटा को निशाना बनाया जाता है।

"कंप्यूटर की दुनिया में छाया अंधकार,
साइबर युद्ध का चल रहा व्यापार।
न बंदूक, न टैंक, न बमों की मार,
चुपके से चलता है ये डिजिटल वार।"

इसमें विभिन्न तकनीकों का उपयोग होता है जैसे हैकिंग, वायरस और मालवेयर फैलाना, डीडॉस हमले, डेटा चोरी और साइबर जासूसी। इसके मुख्य उद्देश्यों में दुश्मन की महत्वपूर्ण डेटा चोरी, संचार तंत्र को बाधित करना, हानि पहुंचाना, महत्वपूर्ण इंफ्रास्ट्रक्चर को नुकसान पहुंचाना और मनोवैज्ञानिक युद्ध शामिल हैं। साइबर युद्ध के लक्ष्य में सरकारी संस्थान, सैन्य ठिकाने, बैंक और अन्य महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे शामिल होते हैं।

इंटरनेट के बढ़ते उपयोग और डिजिटल युग में डेटा की महत्ता के कारण साइबर युद्ध का प्रभाव और खतरा निरंतर

बढ़ रहा है। वर्तमान युग में लगभग सभी महत्वपूर्ण सेवाएं और आधारभूत संरचना इंटरनेट और कंप्यूटर नेटवर्क पर निर्भर हैं। इनमें बैंकिंग सिस्टम, बिजली ग्रिड, स्वास्थ्य सेवाएं, सैन्य कमांड और कंट्रोल सिस्टम, परिवहन नेटवर्क और यहां तक कि जल आपूर्ति भी शामिल है। अगर इन प्रणालियों पर हमला होता है, तो इससे गंभीर परिणाम हो सकते हैं, जैसे आर्थिक संकट, सामरिक हानि, और जन जीवन पर गंभीर प्रभाव।

साइबर युद्ध के प्रमुख उदाहरण

1. **स्टक्सनेट वायरस-** स्टक्सनेट एक मालवेयर था जिसे 2010 में ईरान के परमाणु संयंत्रों को निशाना बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया। यह वायरस परमाणु संयंत्रों के सेंट्रीफ्यूज को संक्रमित कर उन्हें नष्ट करने में सक्षम था।

2. **रूस द्वारा यूक्रेन पावर ग्रिड हमला-** 2015 में, रूस द्वारा यूक्रेन के पावर ग्रिड को निशाना बनाते हुए उसे कई घंटों के लिए ठप्प कर दिया गया, जिससे लाखों लोगों को घंटों तक बिजली की कटौती का सामना करना पड़ा। इस हमले ने साइबर हमलों की शक्ति और प्रभाव को स्पष्ट कर दिया।

3. **उत्तरी कोरिया द्वारा सोनी पिक्चर्स हैक -** 2014 में, उत्तरी कोरिया के हैकर्स ने सोनी पिक्चर्स एंटरटेनमेंट के नेटवर्क पर एक साइबर हमला किया, जिसमें संवेदनशील जानकारी, फिल्में और कर्मचारियों के व्यक्तिगत डेटा को चुरा लिया गया। यह हमला 'द इंटरव्यू' फिल्म के रिलीज के संबंध में हुआ था।

4. **चीन का 'ऑपरेशन ऑरोरा' -** 2009-2010 में, चीनी हैकर्स ने कई प्रमुख अमेरिकी कंपनियों जैसे गूगल, एडोब, और अन्य पर हमला किया। यह हमला डेटा चोरी और व्यापारिक रहस्यों को प्राप्त करने के लिए किया गया था।

5. **वाना क्राई रैंसमवेयर हमला -** 2017 में, वाना क्राई रैंसमवेयर ने दुनिया भर के कई संस्थानों को निशाना बनाया, जिसमें अस्पताल, बैंक और कंपनियां शामिल थीं। इस हमले में कंप्यूटर को लॉक करते हुए और डेटा को एन्क्रिप्ट करते हुए उनसे फिरौती मांगी गई थी।

साइबर युद्ध का विकास -

साइबर युद्ध का विकास तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक परिवेश में एक महत्वपूर्ण विकास है।

1. **साइबर युद्ध का आरंभ (1939 – 1990) -** साइबर युद्ध का प्रारंभ विशेष रूप से साइबर स्पेस में गुप्त गतिविधियों के माध्यम से विश्व युद्ध के समय हुआ। इसकी शुरुआत व्यक्तिगत कंप्यूटरों और नेटवर्क सुरक्षा में कमी के कारण हुई। 1990 के दशक में इसे लेकर गंभीर चिंताएं बढ़ने लगीं जब कंप्यूटर वायरस का प्रकोप बढ़ गया और सरकारें, सैन्य और अन्य संगठन अपनी साइबर सुरक्षा में ज्यादा ध्यान देने लगे।

2. **उन्नति और विस्तार (1990 - 2000) -** 2000 के दशक में इंटरनेट का व्यापक उपयोग साइबर युद्ध को एक नई दिशा देने लगा। जब साइबर हमले का उपयोग राष्ट्रों और अन्य संगठनों द्वारा उच्चतम स्तर पर किया गया, तो साइबर युद्ध की बाधाओं और संवाद में वृद्धि हुई। यहां तक कि इसका उपयोग वित्तीय अपराध और गुप्त सेना के साथ युद्ध के मामलों में किया गया।

3. **मॉडर्न युद्ध (2000 - 2010) -** इस दशक में साइबर हमलों के स्तर में वृद्धि हुई, जैसे डेटा चोरी, ऑनलाइन अपराध और साइबर जासूसी। देशों द्वारा स्वतंत्र साइबर रक्षा नीतियों को विकसित किया गया और युद्धाभ्यास आरंभ किया गया।

4. **आधुनिक युद्ध (2010 - वर्तमान) -** आजकल, साइबर युद्ध एक सशक्त और संघर्षपूर्ण क्षेत्र बन गया है। देश और अन्य संगठन आपातकालीन और जानकारी युद्धाभ्यास कर रहे हैं ताकि वे साइबर हमलों का सामना कर सकें। साइबर युद्ध अब सरकारों, संगठनों और व्यक्तियों के लिए एक बड़ी चुनौती एवं मौका बन गया है।

5. **वर्तमान स्थिति -** आज, साइबर युद्ध न्यायिक और नैतिक बगावत के साथ एक वैज्ञानिक अनुसंधान के रूप में देखा जाता है। राष्ट्रीय स्तर पर आधुनिक साइबर हमलों के समर्थन में विशेषज्ञों का उपयोग किया जा रहा है जो साइबर सुरक्षा के उन्नत तंत्र को बनाने में सक्षम हैं।

6. भविष्य की दिशा - भविष्य में, साइबर युद्ध का विस्तार और अधिक उन्नत होने की संभावना है, जिसमें नई तकनीकी उपकरणों, जैसे एंड टू एंड एन्क्रिप्शन, ब्लॉकचेन का विस्तार वाणिज्यिक बजट पर निर्भर करेगा।

साइबर युद्ध के तत्व

साइबर युद्ध के विभिन्न तरीके निम्नलिखित हैं -

1. मालवेयर - मालवेयर या "दुष्ट सॉफ्टवेयर" हानिकारक सॉफ़्टवेयर है जिसे दुश्मन के कंप्यूटर सिस्टम, नेटवर्क, या डिवाइस में घुसपैठ करते हुए नुकसान पहुंचाने, डेटा चोरी करने या सिस्टम को निष्क्रिय करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसमें वायरस, वर्म्स, ट्रोज़न हॉर्स, रैंसमवेयर आदि शामिल हैं।

2. डिनायल-ऑफ-सर्विस और डिस्ट्रीब्यूटेड डिनायल-ऑफ-सर्विस हमले - डिस्ट्रीब्यूटेड डिनायल-ऑफ-सर्विस हमलों में, हमलावर एक साथ कई कंप्यूटरों का उपयोग करते हुए बड़े पैमाने पर ट्रैफिक भेजकर टारगेट सिस्टम, सर्वर या नेटवर्क को अत्यधिक लोड कर देते हैं जिससे वह ठप्प हो जाता है या उसकी सेवा में बाधा आती है और वास्तविक उपयोगकर्ताओं के लिए अनुपलब्ध हो जाता है।

3. फ़िशिंग - फ़िशिंग में हमलावर धोखाधड़ी वाले ईमेल, संदेश या वेबसाइट के माध्यम से उपयोगकर्ताओं की संवेदनशील जानकारी जैसे यूज़रनेम, पासवर्ड, क्रेडिट कार्ड विवरण, बैंक विवरण आदि चुराने का प्रयास करते हैं।

4. स्पायवेयर - स्पायवेयर एक प्रकार का मालवेयर है जो गुप्त रूप से पीड़ित के कंप्यूटर पर स्थापित होकर उसकी गतिविधियों की निगरानी करता है तथा डेटा को एकत्र कर हमलावर को भेजता है, जैसे ब्राउज़िंग हिस्ट्री, ईमेल्स इत्यादि।

5. सोशल इंजीनियरिंग - इस तकनीक में हमलावर मनोवैज्ञानिक रूप से लोगों को धोखा देकर उनकी कमजोरियों का फायदा उठाते हैं और उनकी गोपनीय जानकारी प्राप्त करते हैं। इसमें प्रीटेक्स्टिंग, बैटिंग, टेलिफ़ोन फ्रॉड आदि शामिल हैं।

6. एडवांस्ड पर्सिस्टेंट थ्रेट - एडवांस्ड पर्सिस्टेंट हमले लंबी अवधि के लिए योजनाबद्ध होते हैं और विशेष रूप से बड़े संगठन या सरकारी संस्थाओं पर लक्षित होते हैं। इसमें हमलावर बिना किसी के ध्यान में आए धीरे-धीरे सिस्टम में घुसपैठ कर महत्वपूर्ण जानकारी चुराता है।

7. रैनसमवेयर - रैनसमवेयर एक प्रकार का मालवेयर है जो कंप्यूटर सिस्टम या डेटा को एन्क्रिप्ट करते हुए बंद कर देता है और फिर डेटा को डिक्रिप्ट करने के लिए फिरौती मांगता है।

साइबर युद्ध के निहितार्थ

साइबर युद्ध के निहितार्थ कई स्तरों पर प्रभाव डाल सकते हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं -

1. राष्ट्रीय सुरक्षा - सरकारी संगठनों, सैन्य नेटवर्क और महत्वपूर्ण अवसंरचनाओं पर किए गए साइबर हमले से दुश्मन देश को सामरिक लाभ मिल सकता है और राष्ट्रीय सुरक्षा गंभीर खतरे में आ सकती है। यह महत्वपूर्ण रक्षा प्रणाली, जैसे रेडार सिस्टम, मिसाइल नियंत्रण प्रणाली, बिजली ग्रिड, जल आपूर्ति, परिवहन प्रणाली आदि को बाधित करते हुए नुकसान पहुंचा सकते हैं।

2. आर्थिक प्रभाव - साइबर हमले आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित कर सकते हैं। बैंकों, वित्तीय संस्थानों और व्यापारिक संगठनों पर हमले से बैंकिंग और वित्तीय लेन-देन रुक सकते हैं, जिससे बड़ी वित्तीय समस्याओं के साथ आर्थिक हानि के साथ देश की आर्थिक स्थिरता को खतरा हो सकता है।

3. डेटा चोरी और गोपनीयता का उल्लंघन - साइबर हमलों के माध्यम से संवेदनशील डेटा जैसे सैन्य गोपनीयता, अनुसंधान डेटा और व्यक्तिगत जानकारी को चुराया जा सकता है, जैसे सरकारी दस्तावेज, सैन्य रणनीति, और नागरिकों की व्यक्तिगत जानकारी जिससे नागरिकों की गोपनीयता और व्यक्तिगत सुरक्षा का हनन हो सकता है।

4. संचार अवरोध एवं सामाजिक अव्यवस्था - साइबर हमलों के माध्यम से इंटरनेट सेवाओं और संचार नेटवर्क को बाधित कर आम जनता और सरकारी एजेंसियों के बीच संचार को तोड़ा जा सकता है जिससे समाज के विभिन्न हिस्सों में झूठी सूचनाएं फैलाकर और सोशल मीडिया हेरफेर द्वारा समाज में अफवाहें और अव्यवस्था पैदा की जा सकती हैं। यह दंगे भड़काकर और राजनीतिक स्थिरता को नुकसान पहुंचाकर जनसाधारण में भय, अविश्वास और असंतोष को बढ़ावा दे सकता है।

5. वाणिज्यिक और औद्योगिक जासूसी - साइबर हमलों का उपयोग वाणिज्यिक और औद्योगिक जासूसी के लिए किया जा सकता है। इससे कंपनियों के व्यापारिक रहस्य और प्रौद्योगिकी को चोरी कर उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रभावित किया जा सकता है जिससे व्यापारिक प्रतिष्ठा एवं दीर्घकालिक आर्थिक नुकसान हो सकता है।

6. राजनीतिक अस्थिरता - साइबर युद्ध चुनावों और राजनीतिक प्रक्रियाओं में हस्तक्षेप कर लोकतांत्रिक प्रणालियों को कमजोर करने में सक्षम होते हैं, जिससे लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की सत्यनिष्ठा खतरे में पड़ सकती है। राजनेताओं और सरकारी अधिकारियों की छवि को नुकसान पहुंचाने के लिए गलत जानकारी फैलाकर राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न की जा सकती है।

7. वैश्विक संबंधों पर प्रभाव - एक देश द्वारा दूसरे देश पर साइबर हमला करने पर कूटनीतिक संघर्ष और युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो सकती है जो राष्ट्रों के बीच विश्वास की कमी और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तनाव को बढ़ावा देता है। साइबर हमलों के कारण व्यापारिक संबंध और कूटनीतिक संवाद प्रभावित होकर कभी-कभी सशस्त्र संघर्ष का कारण भी बन सकते हैं।

चुनौतियां

साइबर युद्ध से निपटने में कई चुनौतियां हैं, जो निम्नलिखित हैं -

1. तकनीकी जटिलता - साइबर हमले बहुत ही जटिल और विविध प्रकार के होते हैं और इनमें उन्नत तकनीकों का उपयोग होता है। नए-नए हमलों के तरीके विकसित होते रहते हैं, जिन्हें पहचानना और रोकना कठिन होता है जिस कारण सुरक्षा प्रणालियों का लगातार अपडेट और सुधार आवश्यक है।

2. पहचान की समस्या - साइबर हमलों के पीछे कौन है, यह जानना बहुत कठिन होता है। हमलावर अपनी पहचान छिपाने के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग करते हैं, जैसे वीपीएन, प्रॉक्सी सर्वर और एन्क्रिप्शन, जिससे उन्हें पकड़ना और उनके खिलाफ कार्रवाई करना कठिन हो जाता है।

3. अनजान खतरों का सामना - साइबर युद्ध के हमले अक्सर बहुत ही परिष्कृत और छुपे होते हैं जिसके कारण इन्हें पहचानना और समय पर प्रतिक्रिया देना मुश्किल हो सकता है। ये हमले पारंपरिक सुरक्षा प्रणालियों को आसानी से पार कर लेते हैं।

4. अंतरराष्ट्रीय समन्वय - साइबर हमले सीमा रहित होते हैं और विभिन्न देशों में स्थित हो सकते हैं जिससे कई देशों को एक साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

हर देश के अपने-अपने कानून और नीतियां वैश्विक समन्वय को जटिल बना देती हैं।

5. **कानूनी और नैतिक मुद्दे -** स्पष्ट और प्रभावी कानूनी ढांचे के अभाव के कारण साइबर युद्ध के खिलाफ कानूनी और नैतिक कदम उठाना जटिल हो सकता है। कई बार यह स्पष्ट नहीं होता कि कौन से कदम कानूनी हैं और कौन से नहीं।

6. **संसाधनों की कमी -** साइबर सुरक्षा के लिए उच्च गुणवत्ता वाले उपकरणों और प्रशिक्षित और कुशल विशेषज्ञों की आवश्यकता है और ऐसे आवश्यक तकनीकी संसाधन और उपकरण महंगे होते हैं। कई संगठन और देश पर्याप्त बजट न होने के कारण अपनी साइबर सुरक्षा को पर्याप्त रूप से मजबूत नहीं कर पाते, जिससे उनके सुरक्षा तंत्र कमजोर रहते हैं।

7. **तेजी से बदलती प्रौद्योगिकी -** साइबर हमले और सुरक्षा तकनीकों का परिदृश्य प्रौद्योगिकी के साथ बहुत तेजी से बदलता है। ऐसे बदलते माहौल के साथ तालमेल बिठाना और नए खतरों के लिए तत्पर रहना चुनौतीपूर्ण होता है।

8. **साइबर जागरूकता की कमी -** आम जनता और कई संगठनों में साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता की कमी होती है। कमजोर पासवर्ड, अद्यतन न किए गए सॉफ़्टवेयर और फ़िशिंग हमलों के प्रति असावधानी जैसी गलतियां हमलों को निमंत्रण देती हैं।

भविष्य

साइबर युद्ध में भविष्य की प्रवृत्तियों को समझने के लिए हमें कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान देना होगा। कुछ प्रमुख भावी प्रवृत्तियां निम्नलिखित हैं -

1. **कृत्रिम प्रज्ञान और मशीन लर्निंग का उपयोग -** कृत्रिम प्रज्ञान (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) और मशीन लर्निंग का उपयोग साइबर हमलों को और अधिक परिष्कृत और प्रभावी बनाने के लिए किया जाएगा। ये तकनीकें साइबर हमलों की पहचान और उन्हें रोकने के लिए महत्वपूर्ण उपकरण बनते जा रहे हैं। ये तकनीकें स्वचालित रूप से पैटर्न पहचान कर संभावित खतरों के बारे में आगाह कर सकती हैं।

2. **इंटरनेट ऑफ थिंग्स के हमले -** जैसे-जैसे अधिक उपकरण इंटरनेट से जुड़ते जा रहे हैं, वैसे-वैसे इंटरनेट ऑफ थिंग्स उपकरण साइबर हमलों का प्रमुख लक्ष्य बन रहे हैं। कमजोर सुरक्षा उपायों के कारण इन्हें आसानी से हैक किया जा सकता है। भविष्य में, इन उपकरणों के माध्यम से व्यापक स्तर पर हमले होने की संभावना है।

3. **रैंसमवेयर का विकास -** रैंसमवेयर हमलों की संख्या और जटिलता बढ़ रही है। ये हमले वित्तीय लाभ के लिए किए जाते हैं और अक्सर महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे और सेवाओं को निशाना बनाते हैं। भविष्य में, इन हमलों की संख्या और परिष्कारिता में वृद्धि होगी, जिसमें हमलावर महत्वपूर्ण डेटा को एन्क्रिप्ट करते हुए डिक्रिप्ट करने के लिए फिरौती की मांग करेंगे।

4. **क्लाउड सुरक्षा संबंधी चुनौतियां -** अधिक से अधिक कंपनियां अपने डेटा को क्लाउड में स्टोर कर रही हैं। क्लाउड सेवाओं का उपयोग बढ़ने के साथ, साइबर अपराधी क्लाउड इन्फ्रास्ट्रक्चर को लक्षित कर डेटा चोरी और सेवा व्यवधान कर सकते हैं। इसलिए, क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर और सेवाओं के साथ-साथ सुरक्षा को मजबूत करना एक प्रमुख प्रवृत्ति होगी।

5. **5G नेटवर्क की सुरक्षा -** 5G नेटवर्क के आगमन के साथ, साइबर सुरक्षा परिदृश्य में महत्वपूर्ण बदलाव आएंगे। 5G नेटवर्क द्वारा अधिक गति और कनेक्टिविटी प्राप्त होने से साइबर हमलों के भी नए रास्ते खुलेंगे।

6. **साइबर जासूसी और सूचना युद्ध-** सभी राष्ट्र साइबर जासूसी और सूचना युद्ध में निवेश बढ़ा रहे हैं जिससे भविष्य में यह प्रवृत्ति बढ़ने के साथ संवेदनशील डेटा की चोरी और राजनीतिक उद्देश्यों के लिए जानकारी का दुरुपयोग अधिक होगा।

7. डीपफेक और दुष्प्रचार - डीपफेक तकनीक और अन्य दुष्प्रचार तकनीकों का उपयोग करते हुए सूचना युद्ध द्वारा जनता की राय को प्रभावित करने के प्रयास बढ़ेंगे जो राजनीतिक स्थिरता और चुनावी प्रक्रियाओं के लिए खतरा हो सकता है।

8. क्वांटम कंप्यूटिंग - क्वांटम कंप्यूटिंग के विकास के साथ पारंपरिक एन्क्रिप्शन विधियां अप्रभावी हो सकती हैं जो साइबर सुरक्षा के लिए एक बड़ी चुनौती बन सकती है। अतः नई एन्क्रिप्शन तकनीकों का विकास और तैनाती आवश्यक होगी।

शमन रणनीतियां

1. मजबूत साइबर सुरक्षा प्रणाली

✔ फायरवॉल - अनधिकृत एक्सेस को रोकने के लिए नेटवर्क फायरवॉल का उपयोग करें।

✔ एंटीवायरस सॉफ़्टवेयर - मालवेयर और वायरस से सिस्टम की सुरक्षा के लिए अपडेटेड एंटीवायरस सॉफ़्टवेयर का उपयोग करें।

✔ एनक्रिप्शन - संवेदनशील डेटा को सुरक्षित रखने के लिए एन्क्रिप्शन तकनीकों का उपयोग करें।

2. उपयोगकर्ता प्रशिक्षण और जागरूकता

✔ फिशिंग हमलों से बचाव - प्रयोक्ताओं को फिशिंग ईमेल और सोशल इंजीनियरिंग के बारे में जागरूक करें। उन्हें साइबर हमलों की पहचान करने और उनका सामना करने का प्रशिक्षण दें।

✔ मजबूत पासवर्ड - प्रयोक्ताओं को मजबूत और अद्वितीय पासवर्ड बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

✔ व्यक्तिगत और पेशेवर सुरक्षा - अपने सिस्टमों और डिवाइस के लिए सुरक्षा की अनुमति देना, जैसे डॉक्यूमेंटेशन, मालवेयर प्रतिकार, और सुरक्षित पासवर्ड प्रबंधन।

3. नियमित सॉफ़्टवेयर अपडेट और पैचिंग

✔ सॉफ़्टवेयर और ऑपरेटिंग सिस्टम को नियमित रूप से अपडेट रखें ताकि वे नए खतरों से सुरक्षित रहें।

✔ सुरक्षा पैच को तत्काल लागू करें ताकि ज्ञात कमजोरियों का फायदा उठाने से बचा जा सके।

4. निगरानी और लॉगिंग

✔ नेटवर्क मॉनिटरिंग -संदिग्ध गतिविधियों का पता लगाने के लिए नेटवर्क ट्रैफिक की लगातार निगरानी करें।

✔ लॉग समीक्षा - सुरक्षा लॉग की नियमित समीक्षा करें ताकि किसी भी असामान्य गतिविधि को तुरंत पहचान कर कार्यवाही की जा सके।

5. आपदा बहाली और निरंतरता योजना

✔ बैकअप सिस्टम - नियमित डेटा बैकअप सुनिश्चित कर बैकअप की पुनःप्राप्ति प्रक्रिया का परीक्षण करें।

✔ आपदा बहाली योजना - संभावित साइबर हमले के बाद व्यवसाय की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए स्पष्ट आपदा बहाली योजना तैयार रखें।

6. एक्सेस कंट्रोल

✔ रोल-बेस्ड एक्सेस कंट्रोल- प्रयोक्ताओं को केवल उनके कार्यों के लिए आवश्यक न्यूनतम एक्सेस प्रदान करें।

✔ मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन - एक्सेस की सुरक्षा के लिए एकाधिक प्रमाणीकरण विधियों का उपयोग करें।

7. सुरक्षा ऑडिट और मूल्यांकन

✔ नियमित ऑडिट - सुरक्षा प्रणालियों और प्रक्रियाओं के नियमित ऑडिट द्वारा जोखिमों का मूल्यांकन कर उसकी स्थिरता सुनिश्चित करें।

✔ पेनेट्रेशन टेस्टिंग - सुरक्षा खामियों का पता लगाने के लिए पेनेट्रेशन टेस्टिंग कराएं।

8. सहयोग और सूचना साझाकरण

✔ साझाकरण नेटवर्क - साइबर खतरों के बारे में जानकारी साझा करने के लिए उद्योग, सरकारी संगठनों और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग करें।

✔ सहयोगी प्रतिक्रिया - साइबर हमले की स्थिति में त्वरित और समन्वित प्रतिक्रिया के लिए विभिन्न संगठनों के साथ मिलकर काम करें।

9. सुरक्षा नीतियां और प्रक्रियाएँ

✔ सुरक्षा नीतियों का निर्माण - संगठन के लिए स्पष्ट

सुरक्षा नीतियों और प्रक्रियाओं का निर्माण एवं पालन करना, जैसे डेटा शेयरिंग और ऑनलाइन सुरक्षा मार्गदर्शन।

- ✔ सुरक्षा नीतियों का परिपालन - सुनिश्चित करें कि सुरक्षा उपकरण और क्षमताएं अच्छी तरह से लागू की गई हों।

इन रणनीतियों का पालन करते हुए, संगठन साइबर युद्ध के खिलाफ सुरक्षित रह सकता है और उसकी साइबर संरचनाएँ सुरक्षित रह सकती हैं।

निष्कर्ष

साइबर युद्ध एक निरंतर विकसित होने वाली चुनौती है जो वैश्विक सुरक्षा परिदृश्य को बदल रही है और राष्ट्रीय और वैश्विक सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। यह न केवल तकनीकी क्षमताओं का परीक्षण करता है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता और व्यक्तिगत गोपनीयता पर भी गहरा प्रभाव डालता है।

आधुनिक समाज की बढ़ती डिजिटल निर्भरता के साथ, साइबर सुरक्षा को मजबूत करना और साइबर युद्ध के खतरों से निपटने के लिए तैयार रहना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके लिए सरकारों, संगठनों, और नागरिकों के बीच सामूहिक प्रयास, सतर्कता, जागरूकता और वैश्विक सहयोग व समन्वय की आवश्यकता है ताकि डिजिटल भविष्य को सुरक्षित और संरक्षित बनाया जा सके।

"साइबर युद्ध एक जंजाल है,
जो कर सकता देशों को बर्बाद है।"

बीईएल गाज़ियाबाद

बुजुर्गों से प्राप्त अतुल्य अनुभव

अजय कुमार दाश

बुजुर्ग अवस्था जीवन का एक ऐसा पड़ाव है जिससे समाज के हर व्यक्ति को एक न एक दिन मित्रता करनी ही होगी। वैसे तो ये अवस्था अनेक कष्ट साथ लाती है, परंतु साथ में लाती है एक अतुलनीय उपहार जो है अनुभव। यह उम्र साथ लाती है, ज्ञान का ऐसा भंडार जो सामाजिक जीवन के अनेक पहलुओं को जानने और परखने से प्राप्त होता है। उनके अनुभव हमें सिखाते हैं कैसे विनम्रता,धैर्य और आत्म-सम्मान जैसे मूल्यों को जीवन का आधार बनाना चाहिए।

बुजुर्ग भावी पीढ़ियों के लिए एक महत्वपूर्ण पीढ़ीगत कड़ी प्रदान करते हैं। संयुक्त परिवार में युवा पीढ़ी को दादा-दादी से मूल्यों और नैतिकता का महत्वपूर्ण ज्ञान मिलता है, जिससे बेहतर मानव और जिम्मेदार नागरिक बनने में उचित मार्गदर्शन मिलता है।

वह चाहें तो अपने स्नेह से परिवार को एक कर सकते हैं, परंतु अगर यही डोर की गांठ मजबूत न हुई तो पूरा परिवार बिखर सकता है। बुजुर्ग व्यक्ति परिवार में लाता है अनुभव समेत एकजुट हो कर रहने की सीख और कठिन समय में एक दूसरे का सहयोग तथा सहारा बनने का ज्ञान।

बुज़ुर्गों के पास अनुभव रूपी जो अनमोल चीज है वो हमें कही ढूढने से भी नहीं मिल सकती। इस अनमोल चीजों को प्राप्त करने के लिए हमें कुछ पल बुज़ुर्गों के पास बैठना चाहिए ताकि उनसे उनके जीवन के अनुभवों को प्राप्त कर अपने जीवन सफल बनाया जा सकें।

वृद्ध लोग अपनी पिछली घटनाओं, अपनी आशाओं-इच्छाओं और जीवन में अपनी उपलब्धियों को याद करते हुए, अपने जीवन के अनुभवों को युवा पीढ़ी तक पहुंचा सकते हैं। यह समय और प्रयास की बचत करेगा और बार-बार एक ही गलती करने से भी सावधान करेगा।

आज की तेजी से बदलती दुनिया में, जहाँ हर कोई अपनी दुनिया में व्यस्त है, बुजुर्गों के अनुभव और उनके द्वारा दिए गए मार्गदर्शन की अहमियत को नजरअंदाज करना हमारे लिए नुकसानदायक हो सकता है। उनके अनुभव से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि हमें किस प्रकार से चुनौतियों का सामना करना चाहिए और उनसे उबरना चाहिए। उनके द्वारा दिए गए मार्गदर्शन से हम अपनी गलतियों से सीख सकते हैं और अपने जीवन को सही दिशा में ले जा सकते हैं।

वास्तव में, बुज़ुर्गों का अनुभव एक मार्गदर्शक की तरह होता है, जो हमें सही दिशा दिखाता है और हमें जीवन के हर क्षेत्र में सफल होने की प्रेरणा देता है। उनकी बातें, उनके द्वारा बताई गई कहानियाँ और उनके अनुभवों से हम न केवल सीखते हैं, बल्कि अपने जीवन को भी अधिक सार्थक और मूल्यवान बना सकते हैं। उनके ज्ञान के भंडार से हमें सजीवता, स्थिरता और सुरक्षा का एहसास होता है, जो हमें अपने जीवन में आगे बढ़ने की शक्ति देता है।

बड़ों का सम्मान करें जब आप जवान हैं, कमजोरों की सहायता करें, जब अप मजबूत हैं। अपनी गलतियों को स्वीकार करें जब आप गलत हों। क्योकि जीवन में एक दिन आप भी बूढ़े होंगे, कमजोर होंगे और गलत भी होंगे।

बीईएल, बेंगलुरू कॉम्प्लेक्स

कहानी सैनिकों की

श्यामल नंदी

एक मेजर के नेतृत्व में 15 जवानों की एक टुकड़ी हिमालय की ओर जा रही थी। उन्हें ऊपर अगले तीन महीने के लिए दूसरी टुकड़ी की जगह तैनात होना था। दुर्गम स्थान, ठण्ड और बर्फ़बारी ने चढ़ाई की कठिनाई और बढ़ा दी थी। बेतहाशा ठण्ड में मेजर ने सोचा की अगर उन्हें यहाँ एक कप चाय मिल जाती तो आगे बढ़ने की ताकत आ जाती लेकिन रात का समय था और आसपास कोई बस्ती वगैरह भी नहीं थी लगभग एक घंटे की चढ़ाई के पश्चात उन्हें एक जर्जर चाय की दुकान दिखाई दी लेकिन अफ़सोस उस पर ताला लगा था। भूख और थकान के चलते जवानों के आग्रह पर मेजर साहब दुकान का ताला तुड़वाने को राज़ी हो गये। ताला तोडा गया तो अंदर उन्हें चाय बनाने का सभी सामान मिल गया। जवानों ने चाय बनाई एवं वहां रखे बिस्किट आदि खाकर खुद को राहत दी। थकान से उबरने के पश्चात सभी आगे बढ़ने की तैयारी करने लगे लेकिन मेजर साहब को यूँ चोरो की तरह दुकान का ताला तोड़ने के कारण आत्मग्लानि हो रही थी। उन्होंने अपने पर्स में से एक हज़ार का नोट निकाला और चीनी के डिब्बे के नीचे दबाकर रख दिया तथा दुकान का शटर ठीक से बंद करवाकर आगे बढ़ गए। इससे मेजर की आत्मग्लानि कुछ हद तक कम हो गई और टुकड़ी अपने गंतव्य की ओर बढ़ चली। वहां पहले से तैनात टुकड़ी उनका इंतज़ार कर रही थी। इस टुकड़ी ने उनसे अगले तीन महीने के लिए चार्ज लिया और वे अपनी ड्यूटी पर तैनात हो गए हो गए। तीन महीने की समाप्ति पर इस टुकड़ी के सभी 15 जवान सकुशल अपने मेजर के नेतृत्व में उसी रास्ते से वापिस आ रहे थे तभी रास्ते में उसी चाय की दुकान को खुला देखकर वहां विश्राम करने के लिए रुक गए। उस दुकान का मालिक एक बूढ़ा चाय वाला था जो एक साथ इतने ग्राहक देखकर खुश हो गया और उनके लिए चाय बनाने लग। चाय की चुस्कियों और बिस्कुटों के बीच वो बूढ़े चाय वाले से उसके जीवन के अनुभव पूछने लगे खास्तौर पर इतने बीहड़ में दुकान चलाने के बारे में बूढ़ा उन्हें कई कहानियां सुनाता रहा और साथ ही भगवान का शुक्रिया अदा करता रहा तभी एक जवान बोला "बाबा आप भगवान को इतना मानते हो... अगर भगवान सच में होता तो फिर उसने तुम्हे इतने बुरे हाल में क्यों रखा हुआ है ? बाबा बोला "नहीं साहब ऐसा नहीं कहते भगवान तो है और सच में है.... मैंने देखा है, आखिरी वाक्य सुनकर सभी जवान कोतुहल से बूढ़े की ओर देखने लगे... बूढ़ा बोला, साहब मैं बहुत मुसीबत में था एक दिन मेरे इकलौते बेटे को आतंकवादीयों ने पकड़ लिया। उन्होंने उसे बहुत मारा पिटा लेकिन उसके पास कोई जानकारी नहीं थी इसलिए उन्होंने उसे मार पीट कर छोड़ दिया। मैं दुकान बंद कर उसे हॉस्पिटल ले गया। मै बहुत तंगी में था साहब और आतंकवादियों के डर से किसी ने उधार भी नहीं दिया मेरे पास दवाइयों के पैसे भी नहीं थे और मुझे कोई उम्मीद नज़र नहीं आ रही थी। उस रात मै बहुत रोया और मैंने भगवान से प्रार्थना की और मदद मांगी। साहब... उस रात भगवान मेरी दुकान में खुद आए। मै सुबह अपनी दुकान पर पहुंचा ताला टूटा देखकर मुझे लगा की मेरे पास जो कुछ भी थोड़ा बहुत था वो भी सब लुट गया। मैं दुकान में घुसा तो देखा 1000 रूपए का एक नोट चीनी के डिब्बे के नीचे भगवान ने मेरे लिए रखा हुआ था। उस दिन एक हज़ार के नोट की कीमत मेरे लिए क्या थी शायद मैं बयान न कर पाऊं... लेकिन भगवान है साहब, भगवान तो है। बूढ़ा फिर अपने आप में बड़बड़ाया... भगवान के होने का आत्मविश्वास उसकी आँखों में साफ़ चमक रहा था। यह सुनकर वहां सन्नाटा छा गया... पंद्रह जोड़ी आंखे मेजर की तरफ देख रही थी जिसकी आंख में उन्हें अपने लिए स्पष्ट आदेश था चुप रहो... मेजर साहब उठे, चाय का बिल दिया और बूढ़े चाय वाले को गले लगाते हुए बोले, हाँ बाबा मैं जानता हूँ भगवान है। तुम्हारी चाय भी शानदार थी। दोस्तों सच्चाई यही है की भगवान तुम्हे कब किसी का भगवान बनाकर कहीं भेज दे, ये खुद तुम भी नहीं जानते।

बीईएल, कार्पोरेट कार्यालय

भारतीय भाषाओं की शक्ति- संस्कृति का आधार

चेरुकूरि फणी माधुरी

भारत विविधताओं से भरा हुआ देश है, जहाँ भाषाओं की भी अनोखी और विशिष्ट धरोहर है। भारतीय भाषाएँ न केवल हमारे संचार का साधन हैं, बल्कि यह हमारी संस्कृति, इतिहास, परंपराओं और सभ्यता के अभिन्न अंग भी हैं। भाषाएँ समाज की सोच और दृष्टिकोण को व्यक्त करने का सबसे सरल माध्यम हैं, और भारतीय भाषाओं ने सदियों से हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय भाषाओं की विविधता-

भारत में 22 आधिकारिक भाषाओं के साथ सैकड़ों बोली और बोलियाँ बोली जाती हैं। ये भाषाएँ भारत के विभिन्न क्षेत्रों, जनजातियों और संस्कृतियों की पहचान को दर्शाती हैं। प्रत्येक भाषा का अपना अलग साहित्य, कला, और परंपरा है। संस्कृत, तमिल, तेलुगु, हिंदी, बंगाली, मराठी, गुजराती, कन्नड़ आदि जैसी भाषाओं का न केवल साहित्यिक योगदान रहा है, बल्कि इन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों में संवाद और आपसी समझ को बढ़ाने का कार्य किया है।

भारतीय भाषाओं की सांस्कृतिक धरोहर-

भारतीय भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। हर भाषा के साथ एक विशेष सांस्कृतिक पहचान जुड़ी होती है। उदाहरण के लिए, तमिल भाषा का साहित्य संगम काल से प्राचीनतम साहित्यिक धरोहर है, जो तमिल संस्कृति की गहरी जड़ों को प्रकट करता है। संस्कृत भाषा में लिखे गए वेद, उपनिषद और महाभारत जैसे ग्रंथ भारतीय दर्शन और संस्कृति के स्तंभ हैं। इसी प्रकार, हिंदी साहित्य में तुलसीदास, कबीर, सूरदास जैसे महाकवियों के साहित्य ने भारतीय समाज में भक्ति और आध्यात्मिकता को गहराई से प्रभावित किया है।

भाषाओं का सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव-

भाषा न केवल व्यक्तिगत और सामाजिक पहचान का माध्यम होती है, बल्कि यह समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में भी योगदान देती है। भारतीय भाषाओं ने समाज के विभिन्न पहलुओं को जोड़ने और विविधता के बावजूद एकता बनाए रखने में अहम भूमिका निभाई है। भारत में भाषा ही वह सेतु है जो विभिन्न धर्मों, जातियों और समुदायों के बीच संवाद और सह-अस्तित्व को संभव बनाती है। इसके साथ ही, भारतीय भाषाओं ने हमारे रीति-रिवाजों, त्योहारों, संगीत, नृत्य और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहित किया है।

आधुनिक युग में भारतीय भाषाओं की भूमिका-

आज के वैश्वीकरण के युग में, अंग्रेजी का प्रभाव तेजी से बढ़ा है, लेकिन इसके बावजूद भारतीय भाषाओं का महत्व कम नहीं हुआ है। भारत में क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा, साहित्य, सिनेमा और कला का प्रचार-प्रसार हो रहा है। सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा भी भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। इंटरनेट और डिजिटल मीडिया के माध्यम से भी भारतीय भाषाओं को एक नई पहचान मिल रही है, जहाँ लोग अपनी मातृभाषा में संवाद कर सकते हैं और अपनी सांस्कृतिक पहचान को संजो सकते हैं।

निष्कर्ष-

भारतीय भाषाएँ हमारी संस्कृति, परंपराओं और इतिहास का आधार हैं। ये न केवल संचार का साधन हैं, बल्कि ये हमें हमारे पूर्वजों से जोड़ती हैं, हमारी सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करती हैं और हमें एक सामाजिक और सांस्कृतिक एकता की भावना प्रदान करती हैं। भारतीय भाषाओं की शक्ति न केवल भारत के भीतर, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हमारी पहचान को मजबूती से प्रकट करती है। अतः, भारतीय भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन हमारे सांस्कृतिक अस्तित्व को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

बीईएल हैदराबाद

पप्पू: कल मैंने एक रॉकेट छोड़ा तो सीधा
सूरज से टकरा गया।
बंटी: फिर क्या हुआ?
पप्पू: फिर मेरी पिटाई हुई।
बंटी: किसने पीटा ?
पप्पू: सूरज की मम्मी ने यार ।

नई सीख और विकसित सोच से लक्ष्य की प्राप्ति

एस. मणिमेगलै

आत्म विश्वास और नई सीख हमें अपने जीवन को विकासशील मार्ग की ओर ले जाने में मदद करता है। अगर हम अपने रास्ते पर निरंतर अग्रसर रहते हैं एवं अपने विकासक्रम में आगे बढ़ते रहते हैं तो एक दिन उसका परिणाम हमें अवश्य ही देखने को मिलता है। इसका एक छोटा सा उदाहरण देखें-

"एक गौरैया पेड़ की चोटी तक पहुंचना चाहती थी। उसने कई बार कोशिश की लेकिन वह नहीं पहुंच सकी। गौरैया को उदास बैठे देखकर पेड़ ने कहा, "मेरे कुछ पत्ते खाओ, तुम्हें शीर्ष पर चढ़ने की ताकत मिलेगी। गौरैया कुछ पत्ते खाती है। वह पेड़ की सबसे निचली शाखा पर चढ़ने में सक्षम थी। गौरैया को आत्मविश्वास मिला। अगले दिन, कुछ और पत्ते खाने के बाद वह दूसरी शाखा पर चढ़ने में सक्षम हुई। अंत में पांच दिनों के बाद, वह गर्व से पेड़ की चोटी पर बैठ गई।"

उसने पेड़ पर चढ़ने में मदद करने के लिए पेड़ को धन्यवाद दिया। उसने कहा कि नैतिकता अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दूसरों से मार्गदर्शन लेती है। साथ ही

विकास आपको आगे बढ़ने में मदद करता है। लोग अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। जब वे उस इच्छित स्थान पर पहुंच जाते हैं तो वे बढ़ने या सुधार करने का प्रयास करना बंद कर देते हैं। उदाहरण के लिए पदोन्नति। निश्चित रूप से अपने करियर में प्रगति करने की इच्छा में कुछ भी गलत नहीं है लेकिन लोग पदोन्नति पाने के बाद उससे संतुष्ट नहीं होते हैं। अतः अंत तक अपनी यात्रा को विस्तारित करें। अधिकांश लोगों को यह पता नहीं है कि वे जीवन में कितनी दूर जा सकते हैं। उनका लक्ष्य बहुत कम होता है। व्यक्तिगत विकास की कुंजी लक्ष्य उन्मुख की तुलना में विकास उन्मुख अधिक होती है।

विकास को अपना लक्ष्य बनाने में कोई बुराई नहीं है। यदि आप निरंतर सीखते रहेंगे, तो आप आज से बेहतर कल होंगे। विकास पर ध्यान केंद्रित करने से, आप हर दिन बुद्धिमान बनते हैं। आप जितना अधिक सीखते हैं और विकसित होते हैं, उतना ही आपकी सीखने की क्षमता बढ़ती है। और यही आपकी क्षमता को बढ़ाती है और भविष्य के लिए आपको आपका मूल्य समझाती है।

हमारे राष्ट्रपिता, महात्मा गांधी ने कहा था, "हम जो करते हैं और हम जो करने में सक्षम हैं, के बीच का अंतर दुनिया की अधिकांश समस्याओं को हल करने के लिए पर्याप्त होगा। यही हमारी क्षमता है। हमें बस इतना करना है कि अधिक सीखने, अधिक विकसित होने, अधिक से अधिक कुशल बनने के लिए लड़ते रहना है। आपके विकास में निवेश आपकी क्षमता, आपकी अनुकूलनशीलता और आपकी पदोन्नति में एक निवेश है। आपको बढ़ने और सीखने में कितना ही खर्च क्यों न करना पड़े, कुछ भी नहीं करने की लागत उससे अधिक होती है।"

स्वयं को बेहतर बनाने से दुनिया बेहतर होती है। धीरे-धीरे बढ़ने से न डरें, लेकिन खड़े न रहें। अपनी गलतियों को भूल जाएं, लेकिन उनसे सीखा सबक याद रखें। हमारे देश के महान विभूति श्री. एपीजे अब्दुल कलाम की एक पंक्ति है -

सीखने से रचनात्मकता आती है, रचनात्मकता हमें सोचने की तरफ बढ़ाती है, सोचने से ज्ञान मिलता है, ज्ञान आप को महान बनाता है।"

हो सकता है कि आप वो न हों जो आपको होना चाहिए। आप वो न हों जो आप करना चाहते हैं। आप वो करें जो आप करना जानते हैं। जैसे-जैसे आप अधिक करते हैं, आप अधिक सीखते हैं। अपने अनुरूप क्षेत्र से बाहर निकलने का निर्णय लें और नई चीजें करने का प्रयास करें। इस तरह आप अधिक विकसित होते हैं। इसलिए स्वयं को बेहतर बनाते हुए, आप दूसरों को भी बेहतर बनाते हैं।

बीईएल, चेन्नई

चेरुकूरि फणी माधुरी

मां की बोली, देश का गौरव

मां की बोली, मीठी बातें,
जैसे फूलों की महकती रातें।
हर शब्द में होता प्यार,
दिल में बसता इसके संसार।

ये भाषा हमें सिखाती है,
सच्चाई की राह दिखाती है।
जिसमें छुपी है हमारी पहचान,
ये है हमारे देश की जान।

देश का गौरव, मां की भाषा,
हम सबकी सच्ची आशा।
नहीं भूलेंगे हम इसे कभी,
ये हमारे दिल की धड़कन अभी।

मां की बोली, देश का मान,
इसके बिना नहीं है पहचान।

बीईएल, हैदराबाद

कंपनी गतिविधियां

श्री मनोज जैन, सीएमडी ने 3 जुलाई, 2024 को माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह से भेट की और उन्हें बीईएल की वर्तमान और भविष्य की परियोजनाओं के बारे में जानकारी दी। माननीय रक्षा मंत्री ने बीईएल के सभी प्रयासों में सहयोग देने का आश्वासन दिया।

श्री मनोज जैन, सीएमडी ने 13 जुलाई, 2024 को नौसेना प्रमुख (सीएनएस) एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी, पीवीएसएम, एवीएसएम, एनएम से मुलाकात की और उन्हें बीईएल की परियोजनाओं के बारे में बताया।

श्री मनोज जैन, सीएमडी ने 3 सितंबर, 2024 को दिल्ली में ओएसडी और नामित रक्षा सचिव श्री राजेश कुमार सिंह, आईएएस से भेंट की और उन्हें बीईएल के बारे में जानकारी दी।

श्री मनोज जैन, सीएमडी ने 5 सितंबर, 2024 को जयपुर में ईटी राजस्थान व्यापार सम्मेलन को संबोधित किया। उन्होंने 'राजस्थान के आधार का सशक्तिकरण- एमएसएमई क्षेत्र की वृद्धि और निर्वहनीयता' पर बात की।

कंपनी गतिविधियां

वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, शिक्षा मंत्रालय के समन्वय से बीईएल द्वारा तैयार इलेक्ट्रॉनिकी (रक्षा एवं रक्षेतर) शब्दावली की पहली प्रति सचिव (राजभाषा), राजभाषा विभाग, भारत सरकार को सौंपते हुए श्री भानु प्रकाश श्रीवास्तव, सीएमडी/बीईएल, श्री विक्रमन एन, निदेशक (मानव संसाधन)/बीईएल।

बीईएल ने अपने पुरुष और महिला कर्मचारियों के लिए वर्दी को नया रूप दिया है। इस रूपांतरण का उद्देश्य दुनिया के सामने बीईएल की आधुनिक और पेशेवर छवि प्रस्तुत करना है, जो अपने मूल मूल्यों और पहचान को बनाए रखते हुए समय के साथ विकसित होती है। यह पहल बीईएल की छवि को भविष्य-उन्मुख रणनीतियों के साथ संरेखित करने और कंपनी की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

13 सितंबर, 2024 को नई दिल्ली में 'उभरती प्रौद्योगिकियों और भू-राजनीति परिवर्तन के युग में आत्मनिर्भरता' पर ईटी गवर्नमेंट इंडिया डिफेंस कॉन्क्लेव 2024 आयोजित किया गया। श्री मनोज जैन, सीएमडी बीईएल ने 'आत्मनिर्भर - भारत को रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भर बनाना-विजन और रोडमैप' पर पैनल चर्चा में बात की। उन्होंने रक्षा क्षेत्र में अनुसंधान और विकास के लिए एक बहु-आयामी रणनीति अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

कंपनी गतिविधियां

बीईएल ने इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कंप्यूटर साफ्टवेयर प्रमोशन काउंसिल (ईएससी) द्वारा राष्ट्रीय निर्यात उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त किया जो रणनीतिक इलेक्ट्रॉनिक / रक्षा इलेक्ट्रॉनिक वर्ग में पहला संस्थापित पुरस्कार है। नई दिल्ली में आयोजित समारोह में बीईएल की ओर से यह पुरस्कार श्री एच पी श्रीनिवास राव, महाप्रबंधक (अंतरराष्ट्रीय विपणन), डॉ मनीषा माथुर, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक और श्रीमती शिरीन सैम्युअल, उप महाप्रबंधक (कार्पोरेट संप्रेषण) ने प्राप्त किया।

जंगली पशु जंगल की सूखी झाड़ियों में घूम रहे थे। सूरज की तपती धूप उनकी पीठ पर पड़ रही थी और वे प्यास बुझाने के लिए इधर-उधर भटक रहे थे। तभी छप-छप की आवाज़ सुनते ही उनके कान खड़े हो गए और रफ्तार तेज हो गई। एक हिरण का बच्चा बड़ी सावधानी से पानी के तालाब के पास गया और बार-बार इधर-उधर देखते हुए पानी पीने लगा।

हिरण के बच्चे को अपनी प्यास बुझाते देख श्री विक्रमन एन, निदेशक (मानव संसाधन) के खुशी का ठिकाना न रहा। वन्य जीवों और वनस्पति का यह स्थायी परितंत्र एम एम हिल्स वन्यजीवन अभ्यारण्य के जीवों को पानी उपलब्ध कराने के लिए बीईएल की एक विशेष सीएसआर पहल थी।

शुष्क पतझड़ी वन होने पर, एम एम हिल्स वन्यजीवन अभ्यारण्य में बहुत कम वर्षा होती है जिसके कारण पानी की कमी हो जाती है। हाथियों सहित यहां के वन्य जीवन सुरक्षित क्षेत्र से बाहर निकल जाते हैं और पानी की खोज में गांवों में पहुंच जाते हैं जिसके कारण मानव-पशु संघर्ष की स्थिति पैदा हो जाती है।

18 व 19 मार्च, 2024 को अपने दौरे के दौरान श्री विक्रमन एन ने बीईएल द्वारा मानव-पशु संघर्ष को कम करने में मदद करने वाली इस पहल को श्री अंकराजू एन एम, सहायक वन संरक्षक, कॉवेरी वन्यजीवन उप-मंडल, कोल्लेगल, कर्नाटक सरकार को सौंपा।

इस पहल में जल निकायों की बहाली, बोरवेल और सोलर वाटर पम्पिंग सिस्टम का प्रावधान और पानी को बचाए रखने के लिए प्राकृतिक रूप से प्रवाहित धाराओं पर बांधों का निर्माण करना शामिल था।

इसके अलावा, शिकार-रोधी शिविरों में बीईएल ने सोलार होम लाइटिंग की व्यवस्था की और वन विभाग द्वारा चौकसी के करने में इस्तेमाल किए जाने वाले वॉकी-टॉकी, टार्च, सर्च लाइट आदि को चार्ज करने के लिए सौर ऊर्जा उपलब्ध कराई गई।

कंपनी गतिविधियां

नवरत्न पीएसयू भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) सामाजिक विकास के संवर्धन में अग्रणी रहा है। एक कार्पोरेट संस्था होने के नाते, बीईएल अपने संचालन के आसपास सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण विकास में सक्रिय रूप से भाग लेती है।

नवरत्न पीएसयू भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर बड़ी पहल करते हुए कंपनी के कार्यपालक निदेशकों, मुख्य तकनीकी अधिकारियों और महाप्रबंधकों के दैनिक उपयोग हेतु उपलब्ध कराए गए कारों के बेड़े में, ट्रैवल एजेंसी से किराए पर 32 टाटा एक्सप्रेस ईवी कार शामिल करते हुए पर्यावरण की सुरक्षा का प्रयास किया। ईवी ने वर्तमान में इस्तेमाल किए जा रहे टोयोटा इटियोस डीज़ल कारों को प्रतिस्थापित कर दिया।

बीईएल ने बेंगलूरु स्थित बीईएल के टाउनशिप में इसके इंजीनियरी सेवा प्रभाग द्वारा निर्मित नए स्टाफ क्वार्टर – बहुमंजिली 'सी' टाइप क्वार्टर में हरित भवन निर्मित करने के इसके नवोन्मेषी प्रयासों के लिए राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त की है और इसके लिए कंपनी को अनंतिम 4-स्टार गृहा रेटिंग प्रदान किया गया।

कंपनी गतिविधियां

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

कंपनी गतिविधियां

हर घर तिरंगा अभियान

कंपनी गतिविधियां

एक पेड़ मां के नाम अभियान

कंपनी गतिविधियां

स्वच्छता अभियान

राजभाषा गतिविधियां

चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

14 सितंबर, 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृह मंत्री, श्री अमित शाह के करकमलों से बीईएल की इलेक्ट्रॉनिक शब्दावली का लोकार्पण किया गया। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, शिक्षा मंत्रालय और बीईएल के विषय-विशेषज्ञों के सहयोग से तैयार की गई इस शब्दावली में रक्षा व रक्षेतर इलेक्ट्रॉनिकी के 7200 तकनीकी शब्दों का हिंदी मानकीकरण किया गया।

कंठस्थ 2.0 प्रतियोगिता के विजेता

चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में बीईएल कार्पोरेट के राजभाषा अधिकारी श्री श्रीनिवास राव को कंठस्थ 2.0 प्रतियोगिता में उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

विदेश स्थित कार्यालय का निरीक्षण

दिनांक 19.09.2024 को महाप्रबंधक (आंतरिक लेखा परीक्षा),कार्पोरेट कार्यालय द्वारा बीईएल के न्यूयार्क स्थित कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

रक्षा मंत्रालय द्वारा निरीक्षण

दिनांक 12.07.2024 को श्री मनोज कुमार चौधरी, सहायक निदेशक (राजभाषा), रक्षा मंत्रालय द्वारा सीआरएल-गाज़ियाबाद का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण बैठक में सीआरएल-गा.बाद के राभाकास के अध्यक्ष व सभी सदस्य उपस्थित थे।

दिनांक 13.07.2024 को श्री मनोज कुमार चौधरी, सहायक निदेशक (राजभाषा), रक्षा मंत्रालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय-दिल्ली का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय-दिल्ली के राभाकास के अध्यक्ष व सभी सदस्य उपस्थित थे।

उप निदेशक, राजभाषा विभाग द्वारा निरीक्षण

दिनांक 02.07.2024 को श्री अनिर्बान कुमार बिस्वास, उप निदेशक (कार्यान्वयन) / दक्षिण, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बेंगलूरु द्वारा बीईएल कार्पोरेट कार्यालय का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण बैठक में सीएमडी, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) उपस्थित थे।

दिनांक 25.05.2024 को श्री प्रदीप कुमार सेठिया, महाप्रबंधक (आंतरिक लेखापरीक्ष), कार्पोरेट कार्यालय द्वारा बीईएल की चेन्नई यूनिट का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। निरीक्षण बैठक में चेन्नई यूनिट की राभाकास के अध्यक्ष और सभी सदस्य उपस्थित थे। यह निरीक्षण संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली के आधार पर किया गया।

दिनांक 22.06.2024 को श्री हरिकुमार आर, महाप्रबंधक (प्रौद्योगिक योजना), कार्पोरेट कार्यालय द्वारा बीईएल की नवी मुंबई यूनिट का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। निरीक्षण बैठक में नवी मुंबई यूनिट की राभाकास के अध्यक्ष और सभी सदस्य उपस्थित थे। यह निरीक्षण संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली के आधार पर किया गया।

दिनांक 05.07.2024 को श्रीमती नीति पंडित, महाप्रबंधक (रणनीतिक योजना), कार्पोरेट कार्यालय द्वारा बीईएल की हैदराबाद यूनिट का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। निरीक्षण बैठक में हैदराबाद यूनिट की राभाकास के अध्यक्ष और सभी सदस्य उपस्थित थे। यह निरीक्षण संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली के आधार पर किया गया।

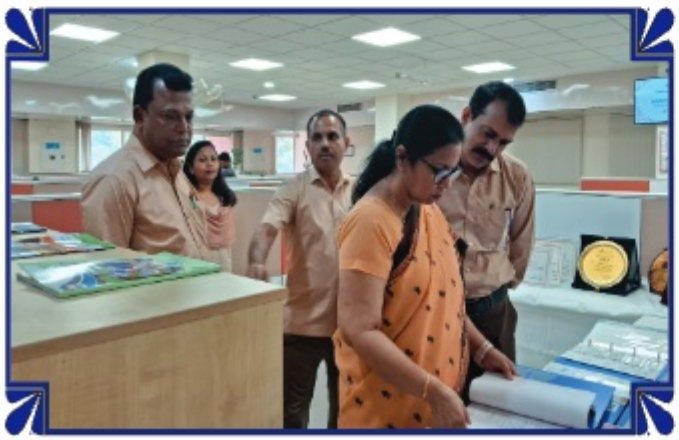

दिनांक 09.08.2024 को श्रीमती नीति पंडित, महाप्रबंधक (रणनीतिक योजना), कार्पोरेट कार्यालय द्वारा बीईएल की पंचकूला यूनिट का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। निरीक्षण बैठक में पंचकूला यूनिट की राभाकास के अध्यक्ष और सभी सदस्य उपस्थित थे। यह निरीक्षण संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली के आधार पर किया गया।

हिंदी माह

कार्पोरेट कार्यालय, बेंगलूरु

कार्यालय के स्वागत स्थल व प्रमुख स्थलों में प्रचार प्रदर्श

कृष्णा सोबती व्याख्यानमाला

हिंदी माह के पहले कार्य दिवस यानी 02 सितंबर, 2024 को कृष्णा सोबती व्याख्यानमाला-25 के अंतर्गत हिंदी पत्रकारिता विषय पर हिंदी व्याख्यान का आयोजन किया गया। श्री आशुतोष भारद्वाज, हिंदी पत्रकार व लेखक ने व्याख्यान दिया। श्री वासुधेंद्रा, प्रसिद्ध कन्नड़ा लेखक व कर्नाटक साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता इस दौरान विशेष आमंत्रिती थे। कार्यक्रम के उपरांत हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

प्रतियोगिताएं

हिंदी माह के दौरान कार्पोरेट कार्यालय के कर्मचारियों और प्रशिक्षुओं के लिए प्रशासनिक शब्दावली, हां, मुझे याद है, हिंदी-कन्नड़ संगम, अंताक्षरी और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, जिनमें कुल 78 कर्मचारियों (प्रशिक्षु सहित) ने हिस्सा लिया और 27 कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। प्रतिभागियों को भी स्मृति-चिह्न प्रदान किए गए।

हिंदी माह

स्कूली बच्चों के लिए हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता

हिंदी का प्रचार-प्रसार कार्यालय के बाहर भी हो, इस उद्देश्य से हिंदी माह के दौरान दिनांक 04.09.2024 को शासकीय ज़िंदल विद्यालय, अब्बिगेरे, बेंगलूरु में कक्षा 10 वीं के विद्यार्थियों के लिए निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई,जिसमें 108 विद्यार्थियों ने भाग लिया। विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कार प्राप्त करने हेतु बीईएल कार्पोरेट कार्यालय में आमंत्रित किया गया। इसके अलावा, जिन विद्यार्थियों को पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ, ऐसे सभी विद्यार्थियों को प्रतिभागिता पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

परिजनों के लिए अंताक्षरी प्रतियोगिता

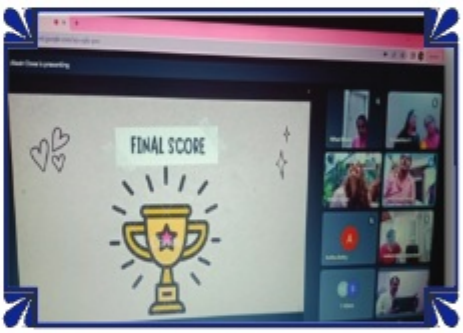

हिंदी दिवस के सुअवसर पर कार्पोरेट कार्यालय के स्टाफ के परिजनों के लिए ऑनलाइन अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

उच्चाधिकारियों के लिए राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

कार्पोरेट कार्यालय के उच्चाधिकारियों के लिए राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

हिंदी माह

चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में बीईएल की प्रतिभागिता

चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, भारत मंडपम, नई दिल्ली में बीईएल के 30 अधिकारियों / कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्पोरेट कार्यालय में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन

हिंदी माह

हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक 25.09.2024 कार्पोरेट ऑडिटोरियम में अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में हिंदी माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया।

सीएमडी राजभाषा शील्ड

वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान कार्पोरेट कार्यालय में सर्वोत्तम राजभाषा कार्यान्वयन के लिए कंपनी सचिवालय और प्रबंध सेवा विभागों को सीएमडी की राजभाषा शील्ड प्रदान की गई।

हिंदी माह

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

दिनांक 25.09.2024 को अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न हुई। अधीनस्थ यूनिटें / कार्यालय के राजभाषा प्रभारियों ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से भाग लिया।

भाषाई सौहार्द

हिंदी भाषा के प्रति प्रेम व सौहार्द जागृत करने के लिए माह के अंतिम दिन कार्पोरेट कार्यालय में भाषाई सौहार्द कार्यक्रम के तहत लोकप्रिय हिंदी धारावाहिक मालगुड़ी डेज का प्रसारण किया गया।

बेंगलूरु कॉमप्लेक्स

02 सितंबर, 2024 को जनसंपर्क कक्ष, प्रबंधन भवन में निदेशक की अध्यक्षता में सुबह 08.30 बजे दीप प्रज्वलन के साथ हिंदी माह का उद्घाटन कार्यक्रम शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर प्रत्येक एसबीयू/सीएसजी के प्रमुख उपस्थित थे। अध्यक्ष महोदय ने हिंदी साहित्यकार श्री गिरिजा माथुर की कविता का पाठ किया तथा उन्होने कहा कि हिंदी में सभी भारतीय भाषाएं समाहित हुई हैं, यह बहुत ही सरल एवं सहज भाषा है। उसी दिन पुराने जन संपर्क कक्ष में दोपहर 2.00 बजे प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। बी.ई.एल. गीत के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

हिंदी माह समारोह का सुचारू आयोजन हेतु बी.ई.एल. बेंगलूरु संकुल में हिंदी माह आयोजन समिति गठित की गई। समिति के अध्यक्ष श्री चेतन सिंह पाटिल औटी, स्थानापन्न महाप्रबंधक (मा.सं.) के मार्गदर्शन में 02.09.2024 से 10.09.2024 तक भोजनालय-1 व पुराने जनसंपर्क कक्ष में सात प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें सही शब्द पहचानें, स्मरण शक्ति,निबंध लेखन तथा एक अनमोल मिनट प्रशासनिक शब्दावली, पोस्टर एवं गायन प्रतियोगिताएं शामिल थीं।

राजभाषा समर्पित इंट्रानेट पोर्टल 'भाषा-कुंज'

राजभाषा अनुभाग के सहयोग से सूचना प्रणाली बें.सं. द्वारा राजभाषा विभाग के लिए समर्पित इंट्रानेट पोर्टल भाषाकुंज का निर्माण किया गया जिसका उद्घाटन दिनांक 05.04.2024 को श्री आर पी मोहन, महाप्रबंधक (मा.सं.) ने डिजिटल माध्यम से किया। इस पोर्टल में राजभाषा कार्यान्वयन की समग्र जानकारी उपलब्ध कराई गई है तथा समय–समय पर राजभाषा हिंदी से संबंधित कार्यक्रम के परिपत्र एवं दस्तावेज इस पोर्टल पर अपलोड किया गया है।

चेन्नई यूनिट

यूनिट में सितंबर के प्रथम दिन से हिंदी माह का शुभारंभ किया गया एवं गतिविधियां शुरू की गई। दिनांक 14 सितंबर, 2024 को हिंदी दिवस समारोह के दौरान माननीय गृह मंत्री, माननीय रक्षा मंत्री एवं सीएमडी के संदेश पढ़े गए माननीय श्री. जयन्द्रन आई महाप्रबंधक (चेन्नई) की अध्यक्षता में सभी वरिष्ठ अधिकारियों के साथ हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया।

हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह 2024 सितंबर माह के अंत में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आरंभ स्वागत भाषण श्री श्यामलाल दास, सहा. प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया। कार्यालय के महाप्रबंधक श्री.आई जयन्द्रन ने हिंदी माह में आयोजित कार्यक्रमों के बारे में अपना सम्बोधन दिया। उन्होंने सभी विभागीय प्रमुख को धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि कार्यालय के हिंदी कार्यान्वयन में वे अपने विभाग के कार्मिकों को हिंदी सीखने एवं हिंदी कार्यक्रमों में भाग लेने में सहयोग कर रहें हैं। यूनिट प्रमुख ने सभी विभागीय प्रमुख/राभाकास सदस्यों को निर्देश दिए कि वे हिंदी में ज्यादा से ज्यादा काम करें जिससे उनके विभाग के अन्य पदो के कार्मिक भी उनसे प्रेरणा प्राप्त करें एवं हिंदी में काम करें एवं हिंदी प्रोत्साहन योजना का लाभ उठा सके।

हिंदी माह 2024 के दौरान कार्यालय में स्थायी कार्मिकों हेतु कुल 7 हिंदी प्रतियोगिताएँ जैसे- प्रशासनिक शब्दावली,देवनागरी लिपि,अनुवाद, हिंदी वाक्य संरचना, दिए गए चित्र का हिंदी अर्थ, हिंदी शब्द चयन, राजभाषा नियम आयोजित किए गए। इस वर्ष कार्यालय में संविदा कर्मियों के लिए भी कुल 3 हिंदी प्रतियोगिता आयोजित की गई।

हैदराबाद यूनिट

हैदराबाद यूनिट में सितंबर 2024 को हिंदी माह के रूप में मनाया गया और इस दौरान यूनिट के कर्मचारियों और प्रशिक्षुओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिंदी माह समापन कार्यक्रम – दि. 30.09.2024 को मुख्य अतिथि कप्तान श्रीनाथ यू नायर, प्रभारी अधिकारी, एनटीजी, हैदराबाद, श्री के श्रीनिवास, महाप्रबंधक (ईडबल्युएनएस) एवं यूनिट प्रमुख व डॉ सीएच विश्वनादम, महाप्रबंधक की अध्यक्षता में (ईडबल्युएलएस) हिंदी माह समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 100 कर्मचारियों ने भाग लिया।

राजभाषा अधिकारी ने राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियों से कर्मचारियों को अवगत कराया और हिंदी माह कार्यक्रमों का ब्योरा दिया। महाप्रबंधक (ईडबल्युएलएस) ने ईडबल्युएलएस एसबीयू की राजभाषा गतिविधियों का ब्योरा दिया और पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। कर्मचारियों को संबोधित करते हुए यूनिट प्रमुख ने राजभाषा कार्यान्वयन प्रयासों की सराहना की और पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को बधाई दी। इसी उत्साह के साथ साल-भर हिंदी काम-काज में अपना योगदान देनें के लिए सभी को प्रोत्साहित किया। मुख्य अतिथि एवं महाप्रबंधक (ईडबल्युएनएस) व यूनिट प्रमुख एवं महाप्रबंधक (ईडबल्युएलएस) द्वारा हिंदी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता एवं पुरस्कार/प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत चयन किए गए कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। अपर महाप्रबंधक (गुणवत्ता) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ यह कार्यक्रम संपन्न हुआ।

दिनांक 23.08.2024 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) के तत्वावधान में बीईएल हैदराबाद यूनिट में अंतर उपक्रम अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें नगर स्थित अन्य पीएसयू के राजभाषा कर्मियों सहित कुल 40 प्रतिभागी उपस्थित हुए। इसके अलावा नराकास के अंतर उपक्रम प्रतियोगिताओं में यूनिट के कर्मचारियों की प्रतिभागिता भी सुनिश्चित की गई।

मचिलिपट्नम यूनिट

सितंबर माह हिंदी माह के रूप मे मनाया गया। 03 सितंबर को हिंदी माह समारोह का उद्घाटन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में श्री. वी एस वी आर फणि कुमार, सदस्य सचिव (राभाकास) ने हिंदी माह में आयोजित होने वाली सभी गतिविधियो के बारे मे सभी को अवगत कराया। इसके बाद राभाकास के अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक श्री जितेंद्र सिंह ने हिंदी दिवस के महत्व को समझाया और सभी कर्मचारियो को हिंदी का कार्यालयीन कार्यो मे ज्यादा से ज्यादा उपयोग करने को कहा। दिनांक 14.09.2024 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में हमारे यूनिट के वारिष्ठ अधिकारियों द्वारा सीएमडी, गृह मंत्रालय, एवं रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी संदेश को पढ़कर सुनाया गया। इस अवसर पर यूनिट में राजभाषा हिंदी को बढावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रमो का आयोजन किया गया। हिंदी माह मे आयोजित इन सभी प्रतियोगिताओं मे कुल 70 से भी अधिक (कार्यपालक,गैर कार्यपालक) कर्मचारीयो ने भाग लिया। यूनिट में हिंदी माह कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओ को प्रमाणपत्र और पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय – मुंबई

कार्पोरेट कार्यालय से प्राप्त दिशा-निर्देशों के अनुसार सितंबर माह को हिंदी माह के रूप में मनाया। क्षेत्रीय कार्यालय के समस्त कर्मचारियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में तथा हिंदी माह एवं हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर आयोजित सभी गतिविधियों में बडे हर्षोल्लास से भाग लेकर अपना कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करने के लिए कटिबद्धता जताई।

नवी मुंबई यूनिट

हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां

स्वच्छता ही सेवा विशेष अभियान के तहत इकाई परिसर के बाहर सफाई अभियान

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योगाभ्यास की झलकियां

क्षेत्रीय कार्यालय – कोलकाता

दिनांक 02 सितंबर 2024 को हिंदी माह उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यालय के मुख्य द्वार पर हिंदी माह समारोह का बैनर प्रदर्शित किया गया और कार्यालय की प्रमुख स्थलों पर महान व्यक्तियों की हिंदी से संबंधित प्रेरणादायी सूक्तियों को प्रदर्शित किया गया। दिनांक 16 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया गया। श्री मानस रंजन मिश्रा जी ने मंगलदीप प्रज्वलित कर हिंदी दिवस का शुभारंभ किया। इसके पश्चात रक्षा मंत्री एवं गृह मंत्री द्वारा भेजे गए हिंदी दिवस पर संदेश का पाठ किया गया। इस अवसर पर कार्यालय प्रमुख ने राजभाषा नीतियों पर जागरूकता के लिए विशेष व्याख्यान दिया। कार्यालय प्रमुख ने हिंदी में की जा रही सरकारी कामकाज पर विस्तार से चर्चा की और अधिक से अधिककार्य कोहिंदी में करने के लिए सभी को प्रोत्साहित किया। हिंदी माह के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें वाद-विवाद, निबंध, हिंदी स्लोगन, अंताक्षरी एवं हिंदी संबन्धित पोस्टर प्रतियोगिताएं शामिल है। सितंबर माह के अंत में हिंदी माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया।

गाज़ियाबाद यूनिट

भारत सरकार व कॉर्पोरेट कार्यालय के दिशा निर्देशों के अनुसार गाजियाबाद यूनिट में इस वर्ष हिंदी माह व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महान व्यक्तियों की प्रेरक सूक्तियाँ वाले बैनर, पोस्टर/हार्ड बोर्ड/स्टेंडीज़ यूनिट /एसबीयूओं में प्रमुख स्थलों पर लगाए गए। यूनिट में 14 सितंबर 2024 को हिंदी दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में सहायक कार्यपालक (राजभाषा) ने महाप्रबंधक (एससीसीएस) व यूनिट प्रमुख श्रीमती रश्मि कथूरिया, महाप्रबंधक प्रभारी (एन्टेना) श्री नवीन कुमार, उपस्थित एसबीयू प्रभारी, वरिष्ठ अधिकारीगण व श्रमिक संगठन/एसोसिएशन के प्रतिनिधिगणों का स्वागत किया तथा कार्यक्रम का आरंभ बीईएल गीत से किया गया, जिसके उपरांत यूनिट प्रमुख व सभी एसबीयू प्रमुखों द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इसके बाद राजभाषा/मानव संसाधन कार्मिकों द्वारा अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री मनोज जैन, माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह और माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के हिंदी दिवस पर जारी संदेश पढ़े गए। तत्पश्चात हिंदी आधारित एक प्रेरक लघु वृत चित्र दिखाया गया।

हिंदी दिवस के इस कार्यक्रम में महाप्रबंधक (एससीसीएस) व यूनिट प्रमुख श्रीमती रश्मि कथूरिया, महाप्रबंधक प्रभारी (ऐंटेना) श्री नवीन कुमार, अन्य एसबीयू के प्रमुख वरिष्ठ अधिकारीगण द्वारा बीईएल गाजियाबाद की राजभाषा पत्रिका 'सृजनी' अंक-10 का विमोचन किया गया। इस अंक के रचनाकारों को प्रोत्साहन हेतु पुरस्कृत किया गया।

हिंदी माह 2024 के दौरान कॉर्पोरेट कार्यालय के दिशा निर्देशों के अनुसार वरिष्ठ अधिकारियों व हिंदीत्तर भाषा-भाषियों, संविदा कर्मियों, शिक्षु, प्रशिक्षुओं समेत सभी कर्मचारियों के लिए कुल 13 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन सभी प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों / अधिकारियोंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। 30 सितंबर, 2024 को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें महाप्रबंधक (डीसीसीएस एवं एनसीएस) ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार व मैथिलीशरण गुप्त आदि पुरस्कृत मेधावी बच्चों सहित सभी प्रोत्साहन पुरस्कार व हिंदी प्रतियोगिता पुरस्कारों 122 के प्रमाण पत्र आबंटित किए।

वर्ष 2023-24 के दौरान हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए ऐंटेना एसबीयू को महाप्रबंधक राजभाषा शील्ड प्रदान की गई।अंत में राजभाषा अधिकारी ने सभी प्रतिभागियों, कर्मचारियों, हिंदी माह आयोजन समिति के सदस्य व वरिष्ठ अधिकारियों को हिंदी माह को सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए उनके सहयोग हेतु आभार व्यक्त किया।

पंचकूला यूनिट

प्रत्येक वर्ष की भांति कार्पोरेट कार्यालय के दिशानिर्देशों के अनुसार पंचकूला यूनिट में हिंदी माह का आयोजन हुआ। हिंदी माह के दौरान सेंट्रल डिस्प्ले प्रणाली पर पूरे माह यूनिट में आयोजित होने वाली हिंदी माह प्रतियोगिताओं की सूचना व राजभाषा हिंदी के विषय में महान हस्तियों के विचारों की विस्तृत पीपीटी बनाकर प्रदर्शित की गई। इसके अलावा कुल 7 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा राजभाषा के कार्यान्वयन में सहयोग हेतु संकल्प व्यक्त किया। श्री समीर, अपर महाप्रबंधक, पंचकूला यूनिट की अध्यक्षता में दिनांक 14.09.2024 को हिंदी दिवस मनाया गया। अपर महाप्रबंधक महोदय ने पंचकूला यूनिट में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति को उत्कृष्ट बनाने का संकल्प लिया और भारत सरकार की राजभाषा नीति व नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं की महत्ता पर अपने विचार रखते हुए कहा कि मातृभाषा में अपने विचारों की अभिव्यक्ति बहुत ही सरलतम रूप से होती है। इस दिन माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, माननीय रक्षा मंत्री एवं सी.एम.डी., बी.ई.एल. द्वारा प्रेषित हिंदी माह के संदेशों को कर्मचारियों के समक्ष पढ़ कर सुनाया गया। दिनांक 23.09.2024 को विशेष साहित्य ज्ञान टीम प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस प्रतियोगिता को विभिन्न चक्रों में विभाजित करके प्रॉजेक्टर के माध्यम से संपूर्ण कराया गया।

दिनांक 30.09.2024 को श्रीमती दीपा बाजपई, महाप्रबंधक की अध्यक्षता में हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। महाप्रबंधक महोदया ने देश-विदेश में राजभाषा हिंदी की स्थिति को बताया और सभी कर्मचारियों को यूनिट में राजभाषा के प्रति अपना कर्तव्य निर्वहन करने के लिए उत्साहित किया। हिंदी माह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विजेताओं को और हिंदी प्रोत्साहन पुरस्कार विजेताओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्रीमती लिपि शर्मा, वरिष्ठ हिंदी अध्यापिका, विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थी।

क्षेत्रीय कार्यालय-दिल्ली

दिल्ली कार्यालय में हिंदी नाम की भाषा ही नहीं अपितु निरंतर काम की भाषा बन चुकी है। हिंदी माह कार्यक्रम की शुरुआत में सुश्री वन्दना कुमारी, प्रशिक्षु अधिकारी (राजभाषा) व सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा कार्यपालक निदेशक प्रभा गोयल एवं महाप्रबंधक श्रीनिवास राव एच.पी. एवं उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों व कर्मचारियों का स्वागत किया और बीईएल गान सुनाया गया। कार्यपालक निदेशक एवं राभाकास के अध्यक्ष महोदय ने सरकारी कार्य में हिंदी के नीति नियमों का अनुपालन करने और कार्यालय में कामकाज विशेषकर कम्प्यूटर में ई-मेल और प्रत्येक माह में एफएलएम में एक हिंदी में टिप्पण की अनिवार्यता किए जाने का सुझाव दिया। सभी कर्मचारियों के लिए दो-दो पुस्तक हिंदी दिवस के अवसर वितरित किया गया। जैसे 'मन-पतंग' 'अपनी हिंदी सवारें' 'जीत आपकी' 'कहानियां कहावतों की' 'श्रेष्ठ कहानियां'। हिंदी माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया।

कोटद्वार यूनिट

हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों हेतु कुल 09 प्रतियोगिताएं - प्रचार वाक्य, पोस्टर, निबंध, चित्र अभिव्यक्ति, उच्चाधिकारियों हेतु राजभाषा जागरूकता, स्वरचित कविता पाठ, हिंदी पत्र लेखन, वर्ग पहेली, प्रतीक द्वारा शब्द निर्धारण आयोजित की गईं जिनमें 158 कार्मिकों ने भाग लिया। दिनांक 14.09.2024 आयोजित 'हिंदी दिवस' के अवसर पर श्री रवीन्द्र नाथ पांडेय, अपर महाप्रबंधक (उत्पाद आश्वासन, उत्पाद समर्थन व गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली) ने हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने का आह्वान किया। इस अवसर पर उच्चाधिकारियों हेतु राजभाषा जागरूकता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं के साथ-साथ हिंदी माह में दिनांक 06.03.2024 को प्रयोजनमूलक एवं व्यावहारिक हिंदी विषय पर राजभाषा कार्यशाला, दि. 12.09.2024 को राजकीय प्राथमिक विद्यालय, निम्बूचौड़ कोटद्वार के बच्चों के साथ हिंदी कार्यक्रम एवं दिनांक 25.09.2024 को अनियत/संविदा कार्मिकों के साथ सामान्य राजभाषा जागरूकता कार्यशाला आयोजित की गई। दिनांक 30.09.2024 को 'हिंदी माह' पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन हुआ जिसमें विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं के साथ-साथ मूल रूप से हिंदी में कार्य करने की वार्षिक प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। वर्ष भर हिंदी कार्यान्वयन के लिए मानव संसाधन एवं प्रशासन विभाग को महाप्रबधक चल वैजयंती प्रदान की गई।

आइए, हिंदी माध्यम से कन्नड़ सीखें
ಬನ್ನಿ ಹಿಂದಿಯ ಮೂಲಕ ಕನ್ನಡ ಕಲಿತು ಮಾತಾಡೋಣ

यह जगह मुझे बहुत अच्छी लगी।	ಈ ಜಾಗ ನನಗೆ ತುಂಬಾ ಇಷ್ಟವಾಯಿತು.	ಈ ಜಾಗಾ ನನಗೆ ತುಂಬಾ ಇಷ್ಟವಾಯಿತು।
मेरे आने तक यही रहो।	ನಾನು ಬರುವವರೆಗೂ ಇಲ್ಲೇ ಇರು.	ನಾನು ಬರುವವರೆಗೂ ಇಲ್ಲೆ ಇರೂ।
जल्दी तैयार रहो।	ಬೇಗ ಸಿದ್ಧರಾಗಿ.	ಬೆಗಾ ಸಿದ್ಧರಾಗಿ।
मैंने अभी तय नहीं किया है।	ನಾನು ಇನ್ನು ಏನು ನಿರ್ಧರಿಸಿಲ್ಲ.	ನಾನು ಇನ್ನೂ ಏನು ನಿರ್ಧರಿಸಿಲ್ಲಾ।
हां, यही बस स्टाप है।	ಹೌದು, ಇದೇ ಬಸ್ ಸ್ಟಾಪ್.	ಹೌದ್ರು, ಇದೆ ಬಸ ಸ್ಟಾಪ।
अगली बस कब आएगी?	ಮುಂದಿನ ಬಸ್ ಯಾವಾಗ ಬರುತ್ತದೆ?	ಮುಂದಿನ ಬಸ ಯಾವಾಗ ಬರುತ್ತದೆ ?
क्या बसें समय पर आती है?	ಬಸ್ಸುಗಳು ಸಮಯಕ್ಕೆ ಸರಿಯಾಗಿ ಬರುತ್ತವೆಯೇ?	ಬಸ್ಸುಗಳು ಸಮಯಕ್ಕೆ ಸರಿಯಾಗಿ ಬರುತ್ತವೆಯೆ ?
यह बस कहां तक जाती है?	ಈ ಬಸ್ಸು ಎಲ್ಲಿಯವರೆಗೆ ಹೋಗುತ್ತದೆ?	ಈ ಬಸ್ಸು ಎಲ್ಲಿಯವರೆಗೆ ಹೊಗುತ್ತದೆ ?
वह रही आपकी बस।	ನಿಮ್ಮ ಬಸ್ಸು ಬಂತು.	ನಿಮ್ಮ ಬಸ್ಸು ಬಂತು ।
इस शहर में टेक्सियों का किराया अधिक है।	ಈ ನಗರದಲ್ಲಿ ಟ್ಯಾಕ್ಸಿಗಳು ಬಹಳ ದುಬಾರಿ.	ಈ ನಗರದಲ್ಲಿ ಟೆಕ್ಸೀಗಳು ಬಹಳ ದುಬಾರಿ ।
वह जहाज़ से इंग्लैंड गया।	ಅವನು ಇಂಗ್ಲೆಂಡಿಗೆ ಹಡಗಿನಲ್ಲಿ ಹೋದ.	ಅವನು ಇಂಗ್ಲೆಂಡಿಗೆ ಹಡಗಿನಲ್ಲಿ ಹೋದಾ।
अपना बोर्डिंग पास तैयार रखिए।	ನಿಮ್ಮ ಬೋರ್ಡಿಂಗ್ ಪಾಸನ್ನು ಸಿದ್ಧವಾಗಿರಿಸಿ ಕೊಂಡಿರಿ.	ನಿಮ್ಮ ಬೋರ್ಡಿಂಗ್ ಪಾಸ ಅನ್ನು ಸಿದ್ಧವಾಗಿರಿಸಿ ಕೊಂಡಿರಿ।
हमें सुरक्षा जांच के लिए बुलाया गया है।	ನಮ್ಮನ್ನು ಸುರಕ್ಷತೆಯ ತನಿಖೆಗಾಗಿ ಕರೆದಿದ್ದಾರೆ.	ನಮ್ಮನ್ನು ಸುರಕ್ಷತೆಯ ತನಿಖೆಗಾಗಿ ಕರೆದಿದ್ದಾರೆ।
कार में जाने पर कितना समय लगेगा?	ಕಾರಿನಲ್ಲಿ ಹೋದರೆ ಎಷ್ಟು ಸಮಯ ಆಗುತ್ತದೆ ?	ಕಾರಿನಲ್ಲಿ ಹೋದರೆ ಎಷ್ಟು ಸಮಯ ಆಗುತ್ತದೆ?
कार में यह छह घंटे का सफर है।	ಕಾರಿನಲ್ಲಿ ಇದು ಆರು ಘಂಟೆಯ ಪ್ರಯಾಣ.	ಕಾರಿನಲ್ಲಿ ಇದು ಆರು ಘಂಟೆಯ ಪ್ರಯಾಣಾ।
हम लोग बारी-बारी से गाड़ी चलाएंगे।	ನಾವು ಒಬ್ಬರಾದ ನಂತರ ಒಬ್ಬರು ಗಾಡಿಯನ್ನು ಓಡಿಸುತ್ತೇವೆ.	ನಾವು ಒಬ್ಬರಾದ ನಂತರ ಒಬ್ಬರು ಗಾಡಿಯನ್ನು ಓಡಿಯುತ್ತೇವೆ।
मैं वहीं रहता हूँ। मुझे वहां नौकरी मिली है।	ನಾನು ಅಲ್ಲೇ ಇರೋದು. ನನಗೆ ಅಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಸಿಕ್ಕಿದೆ.	ನಾನು ಅಲ್ಲ್ ಇರೊದು। ನನಗೆ ಅಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಸಿಕ್ಕಿದೆ।

हमारी सीटें कहां है?	ನಮ್ಮ ಸೀಟುಗಳು ಎಲ್ಲಿದೆ?	ನಮ್ಮ ಸೀಟುಗಳು ಎಲ್ಲಿದೆ?
मैं शाम को वापस आना चाहता हूँ।	ನಾನು ಸಾಯಂಕಾಲನೇ ಹಿಂದಿರುಗುತ್ತೇನೆ.	ನಾನು ಸಾಯಂಕಾಲಾನೆ ಹಿಂದಿರುತ್ತೇನೆ।
मुझे गाड़ी में पढ़ने के लिए एक पुस्तक चाहिए।	ನನಗೆ ಗಾಡಿಯಲ್ಲಿ ಓದಲು ಒಂದು ಪುಸ್ತಕ ಬೇಕು.	ನನಗೆ ಗಾಡಿಯಲ್ಲಿ ಓದಲು ಒಂದು ಪುಸ್ತಕ ಬೇಕು।
क्या आपकी यात्रा एजेंसी सस्ती दरों में सैर का आयोजन करती है?	ನಿಮ್ಮ ಟ್ರಾವೆಲ್ ಏಜನ್ಸಿಯವರು ಕಡಿಮೆ ಬೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರವಾಸಗಳನ್ನು ಏರ್ಪಡಿಸುವರೇ?	ನಿಮ್ಮ ಟ್ರೈವಲ ಏಜೆನ್ಸೀಯವರು ಕಡಿಮೆ ಬೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರವಾಸಗಳನ್ನು ಏರಪಡಿಸುವರೇ?
बस यात्रा बहुत आरामदायक होती है।	ಬಸ್ ಪ್ರಯಾಣವು ಬಹಳ ಅನುಕೂಲಕರವಾಗಿರುತ್ತದೆ.	ಬಸ್ ಪ್ರಯಾಣವು ಬಹಳ ಅನುಕೂಲಕರವಾಗಿರುತ್ತದೆ।
आप इतनी दूर तक कार चला सकते हैं?	ನಿಮಗೆ ಅಷ್ಟು ದೂರ ಕಾರು ಚಲಾಯಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವೇ?	ನಿಮಗೆ ಅಷ್ಟ ದೂರ ಕಾರು ಚಲಾಯಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವೆ?
हमारा हवाई जहाज एक घंटा देर से आएगा।	ನಮ್ಮ ವಿಮಾನವು ಒಂದು ಘಂಟೆ ತಡವಾಗಿ ಬರಲಿದೆ.	ನಮ್ಮ ವಿಮಾನವು ಒಂದು ಘಂಟೆ ತಡವಾಗಿ ಬರಲಿದೆ।
मैंने इसके पहले कभी हवाई यात्रा नहीं की है।	ನಾನು ಇದಕ್ಕೂ ಮೊದಲು ವಿಮಾನದಲ್ಲಿ ಹೋಗೇ ಇಲ್ಲಾ.	ನಾನು ಇದಕ್ಕೂ ಮೊದಲು ವಿಮಾನದಲ್ಲಿ ಹೋಗೊ ಇಲ್ಲಾ।
जहाज़ कितना बड़ा है।	ಹಡಗು ತುಂಬಾ ದೊಡ್ಡದಾಗಿದೆ	ಹಡಗು ತುಂಬಾ ದೊಡ್ಡದಾಗಿದೆ
गाड़ी जाने में अभी बीस मिनट है।	ಗಾಡಿ ಹೊರಡಲು ಇನ್ನೂ ಇಪ್ಪತ್ತು ನಿಮಿಷ ಸಮಯ ಇದೆ.	ಗಾಡಿ ಹೊರಡಲು ಇನ್ನು ಇಪ್ಪತ್ತು ನಿಮಿಷ ಸಮಯ ಇದೆ।
क्या आपने वहां किसी होटल में कमरा बुक किया है?	ನೀವು ಅಲ್ಲಿ ಯಾವುದಾದರೂ ಹೋಟಲಿನಲ್ಲಿ ಕೊಠಡಿಯನ್ನು ಕಾಯ್ದಿರಿಸಿದ್ದೀರಾ?	ನೀವು ಅಲ್ಲಿ ಯಾವುದಾದರೂ ಹೊಟಲಿನಲ್ಲಿ ಕೊಠಡಿಯನ್ನು ಕಾಯ್ದಿರಿಸಿದ್ದೀರಾ?
गाड़ी छूटने ही वाली है।	ಗಾಡಿ ಹೊರಡಲು ತಯಾರಾಗಿದೆ.	ಗಾಡಿ ಹೊರಡಲು ತಯಾರಾಗಿದೆ।
वे गाड़ी नहीं पकड़ सके।	ಅವರಿಗೆ ಗಾಡಿ ಸಿಗಲಿಲ್ಲ.	ಅವರಿಗೆ ಗಾಡಿ ಸಿಗಲಿಲ್ಲ।
क्या मेरा टिकट आपके पास हैं?	ನನ್ನ ಟಿಕೆಟ್ ನಿಮ್ಮ ಹತ್ತಿರ ಇದೆಯೇ?	ನನ್ನ ಟಿಕೆಟ ನಿಮ್ಮ ಹತ್ತಿರ ಇದೆಯೇ?
इस शहर में देखने लायक स्थान कौन–कौन से हैं?	ಈ ನಗರದಲ್ಲಿ ನೋಡುವಂತಹ ಸ್ಥಳಗಳು ಯಾವುವು?	ಈ ನಗರದಲ್ಲಿ ನೋಡುವಂತಹ ಸ್ಥಳಗಳು ಯಾವುವು?
विमान आधे घंटे में उतरेगा।	ಇನ್ನು ಅರ್ಧ ಘಂಟೆಯಲ್ಲಿ ವಿಮಾನ ಕೆಳಗಿಳಿಯುತ್ತದೆ.	ಇನ್ನು ಅರ್ಧಾ ಘಂಟೆಯಲ್ಲಿ ವಿಮಾನ ಕೆಳಗಿಳಿಯುತ್ತದೆ।
कार की डिकी में अपना सामान रख दो।	ನಮ್ಮ ಎಲ್ಲಾ ಸಾಮಾನುಗಳನ್ನು ಕಾರಿನ ಡಿಕ್ಕಿಯಲ್ಲಿ ಹಾಕು.	ನಮ್ಮಾ ಎಲ್ಲಾ ಸಾಮಾನುಗಳನ್ನು ಕಾರಿನ ಡಿಕ್ಕಿಯಲ್ಲಿ ಹಾಕು।

मूल रूप से हिंदी में कार्य करने की वार्षिक प्रोत्साहन योजनाओं के विजेता

प्रेमचंद पुरस्कार, कार्यपालक

ऋतु लांबा
सी.ओ.
प्रथम पुरस्कार

नीरजकुमार चड्ढा
सी.ओ.
प्रथम पुरस्कार

गोपाल
सी.ओ.
द्वितीय पुरस्कार

हनी शर्मा
सी.ओ.
द्वितीय पुरस्कार

शशि कुमार पृथ्वी
आर.ओ. कोल.
तृतीय पुरस्कार

मिहिर जैन
सी.ओ.
तृतीय पुरस्कार

प्रेमचंद पुरस्कार, गैर-कार्यपालक

लालम रमणा
सी.ओ.
प्रथम पुरस्कार

कविता के. पी
सी.ओ.
प्रथम पुरस्कार

उषा एल
सी.ओ.
द्वितीय पुरस्कार

रेखा एस हेरेंजल
सी.ओ.
द्वितीय पुरस्कार

देविका डी पी
सी.ओ.
तृतीय पुरस्कार

आरती बुदप्पनवार
सी.ओ.
तृतीय पुरस्कार

जयशंकर प्रसाद पुरस्कार, कार्यपालक

बेबी शांता
सी.ओ.
प्रथम पुरस्कार

नितिन के पाटिल
आर.ओ. मुंबई
प्रथम पुरस्कार

अरविंद कुमार
आर.ओ. दिल्ली
प्रथम पुरस्कार

अजीत सिंह
आर.ओ. दिल्ली
प्रथम पुरस्कार

श्रीनाथ बी टी
सी.ओ.
प्रथम पुरस्कार

ई ए हरिहरन
सी.ओ.
प्रथम पुरस्कार

चिन्न नागेश एन
आर.ओ. मुंबई
द्वितीय पुरस्कार

अवधेश कुमार सिंह
सी.ओ.
द्वितीय पुरस्कार

शेरीन सैम्युअल एच ए
सी.ओ.
द्वितीय पुरस्कार

ब्रजेश कुमार राय
आर.ओ. वैजाग
द्वितीय पुरस्कार

विपिन कुमार सैनी
आर.ओ. दिल्ली
द्वितीय पुरस्कार

ए एस राव
आर.ओ. वैजाग
तृतीय पुरस्कार

प्रदीप बिजलवान
आर.ओ.दिल्ली
तृतीय पुरस्कार

डी नवीन कुमार
आर.ओ. वैजाग
तृतीय पुरस्कार

तमल सेनगुप्ता
आर.ओ.कोल.
तृतीय पुरस्कार

शिवनाथ कणसे
आर.ओ. मुंबई
तृतीय पुरस्कार

मनोज कुमार नागवंशी
आर.ओ. दिल्ली
चतुर्थ पुरस्कार

एम हरीश
आर.ओ. वैजाग
चतुर्थ पुरस्कार

पिंकू दे
आर.ओ. कोल.
चतुर्थ पुरस्कार

उमेश बी सी
सी.ओ.
चतुर्थ पुरस्कार

मनीष कुमार टी
सी.ओ.
चतुर्थ पुरस्कार

जयशंकर प्रसाद पुरस्कार, गैर-कार्यपालक

दीपु बी
सी.ओ.
प्रथम पुरस्कार

प्रीता एम
सी.ओ.
प्रथम पुरस्कार

शकुंतला वाई
सी.ओ.
प्रथम पुरस्कार

कुम्मी शर्मा
आर.ओ. दिल्ली
प्रथम पुरस्कार

सुनीता आर
सी.ओ.
प्रथम पुरस्कार

भार्गवी जे
सी.ओ.
प्रथम पुरस्कार

शुभा जानकी पी एस
सी.ओ.
द्वितीय पुरस्कार

राजेश्वरी बी
सी.ओ.
द्वितीय पुरस्कार

उषा बी एन
सी.ओ.
द्वितीय पुरस्कार

जयश्री एस
सी.ओ.
द्वितीय पुरस्कार

श्वेता वाई आर
सी.ओ.
द्वितीय पुरस्कार

किरण देठे
आर.ओ. मुबई
द्वितीय पुरस्कार

संध्या पंत
आर.ओ. दिल्ली
द्वितीय पुरस्कार

धीरज शामजी परमार
आर.ओ. मुबई
तृतीय पुरस्कार

मानसा नायका
सी.ओ.
तृतीय पुरस्कार

अस्मा अंजुम
सी.ओ.
तृतीय पुरस्कार

प्रदीप कुमार साव
आर.ओ. कोल
तृतीय पुरस्कार

प्रेम कुमार
सी.ओ.
तृतीय पुरस्कार

टी.वी राव
आर.ओ. वैजाग
चतुर्थ पुरस्कार

शारदा सी एच
सी.ओ.
चतुर्थ पुरस्कार

एस रवि तेजा
आर.ओ. वैजाग
चतुर्थ पुरस्कार

संजय मारुती बोंबे
आर.ओ. मुंबई
चतुर्थ पुरस्कार

नकुल गोयल
आर.ओ. दिल्ली
चतुर्थ पुरस्कार

शर्मिला एन
सी.ओ.
विशेष प्रोत्साहन

कबीर पुरस्कार

बंधकावि वेंकट रामय्या
सी.ओ.

नागार्जुन पुरस्कार

नितिका सरीन
गाज़ियाबाद
प्रथम पुरस्कार

नितेश तिवारी
गाज़ियाबाद
द्वितीय पुरस्कार

नरेश कुमार
गाज़ियाबाद
तृतीय पुरस्कार

मैथिलीशरण पुरस्कार

महक सेठिया
प्रथम पुरस्कार
सुपुत्री, श्री प्रदीप कुमार सेठिया

अभिनव सुराना
द्वितीय पुरस्कार
सुपुत्र, श्री चंचल कुमार सुराना

सारिका पी एस
तृतीय पुरस्कार
सुपुत्री, श्री श्रीनिवास राव

वर्ग पहेली भरें, शब्द ज्ञान बढ़ाए

1		2	3	■	4	5	6	
	■	7		8	■	9		■
10	11	■	12				■	13
14		■	15		■	16		
■	17	18	■	19	20		■	
21			22	■	23		■	
	■	24		25		■	26	
27	28	■	29		■	30		■
31			■	32				

बाएं से दाएं.....

1. देखरेख, अनुरक्षण (2-2), 4. बातचीत (4), 7. प्रबल इच्छा, उत्कट इच्छा (3), 9. समाधान, निवारण (2), 10. स्वर्ग में रहने वाले अमर प्राणी (2), 12. जेल में रहने का दंड (4), 14. दूध में चावल पकाकर, शक्कर मिला कर बनाया गया व्यंजन (2), 15. लक्ष्मी (2), 16. भाग्य, किस्मत (3), 17. धब्बा, कलंक (2), 19. प्रकार, ढंग (3), 21. कहासुनी, मनमुटाव, झगड़ा (4), 23. यश, कीर्ति (2), 24. शारीरिक कोमलता, सुकुमारता, (4), 26. गीला, नम (2), 27. मुकुट (2), 29. सीतापति, राघव (2), 30. मद्य, शराब (2), 31. घुलना-मिलना (3), 32. कृतिकार, रचयिता (5)

ऊपर से नीचे.....

1. अनुकरण, देखकर (2-2), 2. मस्तक,ललाट , (2), 3. चुनौती (4), 5. पूर्णतः बर्बाद, ध्वस्त (3-3), 6. आने वाला व बीता हुआ दिन (2), 8. चमत्कारिक कार्य (4), 11. फलसिद्धि (4), 13. चौकन्ना, सतर्क, सचेत (5), 18. अमानत की रकम खा जाना (3), 20. चांदी (3), 21. ईश्वर का मनुष्य के रूप में जन्म लेना (4), 22. दृश्य (3), 25. कटि (3), 26. मनुष्यों का वर्ग, समुदाय (3), 28. पानी, नीर (2), 30. आगमन (2)

साहित्यकार परिचय

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

हिंदी के प्रकाण्ड विद्वान आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त, 1907 को गाँव आरत दुबे का छपरा, जिला छपरा, उत्तर प्रदेश में हुआ था। द्विवेदी जी का मूल नाम बैजनाथ द्विवेदी था किंतु हिंदी जगत में वे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के नाम से जाने जाते थे।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की प्राथमिक और मिडिल की शिक्षा गांव से ही हुई। इसके बाद उन्होंने संस्कृत महाविद्यालय, काशी से शास्त्री की उपाधि हासिल की। फिर वह बनारस चले गए और यहाँ उन्होंने वर्ष 1930 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से ज्योतिषचार्य की उपाधि प्राप्त की। अपनी शिक्षा पूर्ण करने के बाद वह शांति निकेतन, कोलकाता चले गए और यहाँ उन्होंने वर्ष 1930 में शांति निकेतन में हिंदी का अध्यापन कार्य प्रारंभ किया। यहीं उन्हें गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और आचार्य क्षितिमोहन सेन का सानिध्य प्राप्त हुआ। वहीं उनके प्रभाव के कारण उन्होंने साहित्य का गहन अध्ययन किया और स्वतंत्र लेखन की शुरुआत की। बीस वर्षों तक शांतिनिकेतन में अध्यापन के दौरान वह वर्ष 1940 से 1950 तक हिंदी भवन, शांति निकेतन के निदेशक भी रहे।

इसके उपरांत आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी वर्ष 1950 में वापस बनारस आ गए और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष बने। इसके बाद द्विवेदी जी ने वर्ष 1952 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभाला। उन्हें वर्ष 1955 में प्रथम राजभाषा आयोग के सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया। इस पद पर कुछ वर्षों तक कार्य करने के बाद उन्होंने वर्ष 1960 से 1967 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में हिंदी विभागाध्यक्ष का पद ग्रहण किया।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रकाण्ड विद्वानों में से एक माने जाते हैं। हिंदी साहित्य जगत में द्विवेदी जी ने निबंध, उपन्यास व आलोचना विधा में कई अनुपम कृतियों का सृजन किया हैं। उनकी 'बाणभट्ट की आत्मकथा' (उपन्यास), 'कुटज', 'अशोक के फूल', 'देवदारु', 'नाखून क्यों बढ़ते हैं', 'शिरीष के फूल' (निबंध), 'हिंदी साहित्य की भूमिका' व 'हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास' (आलोचना) आदि को स्कूल के साथ ही बी.ए. और एम.ए. के पाठ्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जाते हैं। हिंदी साहित्य में अपना विशेष योगदान देने के लिए उन्हें भारत सरकार द्वारा वर्ष 1957 में देश के तीसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया था। वर्ष 1973 में उन्हें 'आलोक पर्व' निबंध -संग्रह के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से अलंकृत किया गया।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने संपूर्ण जीवन में कई विधाओं में अनेक अनुपम रचनाएँ हिंदी साहित्य जगत को दी हैं। द्विवेदी जी की रचनाओं और हिंदी के उत्थान में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए उन्हें हिंदी सहित्य जगत में हमेशा याद किया जाता रहेगा। भारतीय डाक विभाग ने द्विवेदी जी के सम्मान में वर्ष 1997 में एक स्मारक डाक टिकट जारी किया था।

बी ई एल गीत

देश की रक्षा अपना फर्ज़ है, भारत की है शान
बी ई एल ! बी ई एल !
भूमि जल हो या हो आसमान,
वीर जवानों के साथ खड़े हरदम,
अंधेरे में भी हम राह को रोशन करें
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !
दशा दिशा का पता बताएं शान से खड़ी रेडारें,
कंधों पर सजते हैं संचार यंत्र हमारे,
जहाज़ हो या अंतरिक्ष यान उनमें तंत्र हमारे,
शिक्षण हो या प्रसारण साथ हैं यंत्र हमारे,
जन जन का सहयोग करें हम,
मतदान को आसान करें हम,
नावू बी ई एल ! मेमू बी ई एल !
आपण बी ई एल ! नांगल बी ई एल !
आमरा बी ई एल ! हम हैं बी ई एल !
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !

70 वर्ष पहले,

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

एक कंपनी राष्ट्र की सुरक्षा करने के लिए
प्रौद्योगिकी विकसित करने हेतु स्थापित हुई।

आज, यह भारत के रक्षा क्षेत्र
का भविष्य संवार रही है।

भूमि, समुद्र और आकाश को सुरक्षित बनाते हुए

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
(रक्षा मंत्रालय के अधीन भारत सरकार का उद्यम)
पंजी. कार्यालय–आउटर रिंग रोड, नागवारा,
बेंगलूरु–560 045, भारत

टॉल फ्री नं.–1800 425 0433
सीआईएन नं.– L32309KA1954GO1000787
www.bel-india.in